# कहानी कैसे लिखना चाहिए



कन्हैयालाल

# कहानी कैसे लिखना चाहिए

प्रणेता

मुंशी कन्हैयालाल एम० ए०,
एल० आर० ए० एल०

सम्पादक "चाँद" (उर्दू), इलाहाबाद; स० सम्पादक
"अदबी दुनिया", लाहौर

---

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१६३१

[ मूल्य ।)

## समर्पण

यह तुच्छ पुस्तिका उन कार्य के भार से दबे हुए सम्पादकों
को समर्पित है, जिनका भार बहुत कुछ हलका हो
जायगा। यदि सब उत्साही लेखक केवल ऐसी ही
कहानियाँ उनके पास भेजें, जो उनकी
पत्रिका के उपयुक्त हों और
जिसमें कम से कम कोई
ऐसा गुण हो कि
वे प्रकाशित होने
योग्य हों।

# भूमिका

इस पुस्तिका के लिए सामान एकत्रित करते समय लेखक ने पश्चिमी समालोचकों और लेखकों के उन लेखों से जो बहुत ही विद्वत्तापूर्ण और उपयोगी मालूम हुए सहायता ली है। इसलिए लेखक इस पुस्तिका के लिखने में मौलिकता का झूठा दावा नहीं करना चाहता। यह पुस्तिका इसलिए लिखी गई है कि हिन्दी में इस विषय की पुस्तक का प्रायः अभाव ही सा है।

इस पुस्तिका में प्रायः वही नियम लिखे गये हैं, जो पश्चिमी देशों में पालन किये जाते हैं, इसलिए संभव है कि यह ख्याल किया जाय कि हिन्दुस्तान की आवश्यकताओं के लिए ये उपयुक्त न होंगे, किन्तु जब कहानी की कला का विकाश हो रहा है और बिलकुल निश्चित नियम भी नहीं बने हैं, ऐसी हालत में काम चलाने के लिए कुछ नियमों का होना अनिवार्य है। जब कहानी की कला कोई निश्चित रूप धारण कर लेगी तो नियम स्वयं ही निश्चित हो जायँगे। इसमें सन्देह नहीं कि यदि वे नियम जो पश्चिम में पालन किये जाते हैं, यहाँ भी पालन किये जायँ तो अवश्य ही हमारे यहाँ की बहुत सी कहानियों की शैली और दर्जा ऊँचा हो जायगा।

यह पुस्तिका कहानी-लेखकों की सुविधा और सहायता के लिए लिखी गई है और इस वजह से संभव है कि इसमें जो नियम हैं, वे देखने में अविहित और विद्वत्ता दिखलानेवाले प्रतीत हों, किन्तु उत्साही लेखक कहानी लिखते समय इस बात का अनुभव करेगा कि ये नियम केवल उसके लिए पथ-प्रदर्शक का काम देंगे और यदि अनुसरण किये गये तो अच्छी कहानी लिखने में, उसे सहायता पहुँचायेंगे और यदि इस पुस्तिका से किसी एक लेखक को भी कुछ लाभ पहुँचा तो इस पुस्तिका का लेखक यह न समझेगा कि उसका परिश्रम व्यर्थ गया।

इस पुस्तिका में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो बढ़ाई जा सकती थीं, और बहुत सी ऐसी भी हैं जो छोड़ दी जा सकती थीं, किन्तु पुस्तिका जिस रूप में है, उसी रूप में इसलिए उपस्थित की जा रही है कि जिसमें विद्वान् और अनुभवी लोग इसकी त्रुटियों को देखकर, ऐसी पुस्तक लिखें जिससे कहानी-लेखकों को ठीक ठीक शिक्षा प्राप्त हो। यदि इस पुस्तिका को देखकर किसी एक विद्वान् को भी इस विषय पर उत्तम पुस्तक लिखने का उत्साह हुआ, तो लेखक को इससे बढ़कर दूसरी प्रसन्नता न होगी, क्योंकि उसकी इस पुस्तिका को यह श्रेय प्राप्त होगा कि हिन्दीसंसार को जिस पुस्तक की बड़ी आवश्यकता थी वह पुस्तक इसको देखकर और उत्साहित हो कर लिखी गई है।

इस पुस्तिका को तैयार करने में कई पुस्तकों का सहारा लिया गया है और यहाँ पर यह बतलाना कि कौन सा भाग कहाँ से लिया गया है, कठिन है। परन्तु लेखक उन सब महानुभावों का कृतज्ञ है, जिनकी सहायता से इस पुस्तिका की रचना हो सकी।

"कृष्णकुञ्ज," इलाहाबाद। कन्हैयालाल

कृष्ण-जन्माष्टमी, १९३१ ई०

# विषय-सूची

परिच्छेद पृष्ठ


१—कहानी ... ... १
२—प्लाट ... ... १५
३—चरित्र-चित्रण ... ... २५
४—कथोपकथन ... ... ३२
५—कहानी की रचना ... ... ३८
६—क्लाइमेक्स ... ... ५०
७—शैली ... ... ५५
८—कहानी के विषय में अन्य विशेष बातें ... ६०
(१)—कहानी का शीर्षक ... ... ६०
(२)—कहानी का मसविदा ... ... ६१
(३)—कहानी का पुरस्कार ... ... ६४
(४)—कौन कहानी कहाँ भेजना चाहिए ... ६५


———

# कहानी कैसे लिखना चाहिए

## परिच्छेद १

### कहानी

जो लोग कहानी लिखना चाहते हैं उन्हें सबसे पहले अपना ध्येय निश्चित कर लेना चाहिए। अधिकांश लेखक अपनी कहानियाँ पत्रिकाओं* में छपने के लिए भेज देते हैं और साथ ही साथ इस बात की आशा रखते हैं कि वे तुरन्त छाप दी जायँ और उनके लिए उन्हें पुरस्कार भी मिल जाय। किन्तु उन लेखकों में बहुत से ऐसे होते हैं जो पत्रिकाओं को कभी पढ़ते ही नहीं। ऐसे लोगों की इतनी बड़ी आशा पर आश्चर्य होता है। जब तक लेखक को किसी पत्रिका की आवश्यकतायें नहीं मालूम हैं तब तक उसके लिए लेख लिखना अँधेरे में ढेला फेंकने के समान है। यह तो बिलकुल साधारण सी बात है, किन्तु इसकी अकसर उपेक्षा की जाती है।

किसी कहानो को सफलता के लिए तीन गुणों की विशेष आवश्यकता है :— चरित्र-चित्रण (Characterisation) की, दृश्य (Scene or Setting) की और प्लाट (Plot) की।

---

* आज-कल कहानियाँ अधिकतर पत्रिकाओं के लिए ही लिखी जाती हैं और उन्हीं में छपती हैं।

उच्च कोटि की पत्रिकाओं में जो कहानियाँ निकलती हैं उनमें ये गुण विशेष रूप से पाये जाते हैं; इससे यह नतीजा निकलता है कि जो लेखक उन्नति करना चाहते हैं उन्हें लिखने की इस कला का कौशल पूर्ण रीति से ज्ञात होना चाहिए ताकि उनकी कहानियों की बस्ती में सजीव मनुष्य बसे हुए दिखाई दें, उनके आचरण उनके वायुमंडल के अनुकूल हों, उसी के प्रभाव से वे प्रभावित हों और उनमें कल्पना की भी उच्चता पाई जाए।

नये लेखक केवल निर्जीव चित्र खींचते हैं। यह पूछा जा सकता है कि उनमें जान कैसे डाली जाय? उनको सजीव बनाने के लिए तीन संक्षिप्त नियमों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उनके बाह्य स्वरूप का वर्णन, उनके कार्यों द्वारा उनके हृदय अथवा आत्मा का चित्रण और उनके विचारों और भावनाओं का कथोपकथन या वर्णन द्वारा प्रकट करना। वास्तव में और भी छोटे छोटे नियम हैं, किन्तु उनमें कोई भी इतना स्पष्ट, विवेक-पूर्ण और लागू नहीं है।

बहुत से लोग यह कहते हैं कि कहानी लिखने की शिक्षा देना असंभव है। किन्तु यह समस्या कला और कौशल में अन्तर समझ लेने से हल हो जाती है। कला की शिक्षा नहीं दी जा सकती हालाँकि कलाविज्ञ पुरुष यदि अपनी कला को पूरी तरह से विकसित करना चाहता है तो उसको अपनी शैली की शिक्षा भली भाँति ग्रहण करनी चाहिए। जिस प्रकार

और कारीगरी के नियम सिखायें जा सकते हैं उसी प्रकार, हमारा विचार है, कि कहानी लिखने के नियम भी सिखाये जा सकते हैं।

लेखक को अपनी सहायता अपने आप करनी पड़ेगी। वह साधारण कहानियों से आरम्भ करके बहुत ऊँचे दर्जे की कहानियाँ लिख सकता है। ऐसी दशा में उसके लिए कोई शिक्षा या उपदेश अधिक लाभदायक नहीं है। किन्तु, अपनी गोली बारूद तैयार रखने और साधारण कहानियाँ भी लिखते रहने से अकसर लेखक अपने ध्येय तक पहुँच सकता है।

कहानी लिखना एक उत्पादक कार्य है जो अपने उच्च शिखर पर पहुँचने से कला के रूप में परिवर्तित हो जाता है। कोई कहानी कला-पूर्ण होने पर भी व्यापारिक वस्तु हो सकती है, क्योंकि पसन्द होने के साथ ही उसका मूल्य भी मिल जाता है। लेखक के लिए सबसे लाभदायक बात यह है कि वह जितना ही अच्छा लिख सके लिखे और इस बात का विचार न करे कि अधिकतर पत्रिकायें किस प्रकार की कहानियाँ छापना पसन्द करती हैं। किन्तु, इसके अतिरिक्त आर्थिक लाभ की तो उसी समय आशा की जा सकती है जब कि पत्रिकाओं के उपयुक्त कहानियाँ लिखी जायँ। कहानियाँ छापनेवाली पत्रिकाओं को केवल कला की विशेष आवश्यकता नहीं होती, उन्हें ज़रूरत होती है उन कहानियों की जिनमें कला के साथ साथ पाठकों के मनोरञ्जन की सामग्री भी हो।

हमको यहाँ पर ऐसी कहानियों से विशेष प्रयोजन नहीं है जिनमें केवल कला ही कला हो। हमें तो असली पहलू पर विचार करना है।

पत्रिकाओं की कहानियों के लिए किसी प्रकार की सफ़ाई देने की आवश्यकता नहीं है। इसका उद्देश्य तो केवल मनोरञ्जन है। पत्रिकाओं के पाठक न तो हमेशा वास्तविक जीवन ही चाहते हैं और न सच्ची घटनायें ही। वे तो विनोद के भूखे रहते हैं।

पत्रिकाओं में कहानियाँ लिखने के लिए कोई ख़ास निश्चित नियम नहीं है। वहाँ तो तरह तरह की कहानियाँ स्थान पा सकती हैं। इस परिमित सीमा में भी मौलिकता का होना सम्भव है—हालाँकि कुछ ऐसे समालोचक, जो ऐसी कहानियों को बिना भले प्रकार जाँच किये बुरा कहते हैं, इस बात पर आपत्ति करेंगे। किन्तु, इसके लिए निश्चित नियम और बन्धन हैं। पत्रिकाओं में किस तरह की कहानियाँ अच्छी नहीं समझी जातीं यह बताना बहुत सरल है। सम्भव है कि सम्पादक हमेशा इस बात को न बता सके कि उसे किस बात की आवश्यकता है, परन्तु यह तो वे अवश्य जानते हैं कि किन बातों की उसे आवश्यकता नहीं है।

कुछ ख़ास तरह की कहानियों की हमेशा माँग रहती है—प्रेम से सम्बन्ध रखनेवाली, साहस से सम्बन्ध रखनेवाली, रहस्यमयी; इत्यादि। नये लेखक या प्रसिद्ध धुरन्धर लेखक—

दोनों ही—पत्रिकाओं के लिए उस समय तक नये ही समझे जायँगे जब तक कि पत्रिकाओं की कहानियों के विषय में वे यह अनुभव न प्राप्त कर लें कि किस पत्रिका में किस प्रकार की कहानियों की गुंजाइश है। तब, लेखक को इस बात का विचार करना चाहिए कि किस प्रकार की कहानियाँ लेखक की रुचि के अनुसार हैं।

बहुत से नये लेखक, मालूम नहीं क्यों, अपनी पहली कहानी दुःखान्त और करुणामय विषयों पर लिख कर अपने को आरम्भ में ही कठिनाइयों में डाल देते हैं। यह अधिक अच्छा होगा कि आरम्भ में अधिक चित्ताकर्षक विषय चुने जायँ।

नये लेखकों से अक्सर यह कहा जाता है कि आप लेख के न छपने पर हतोत्साह न हों। यह राय देना तो ठीक है, किन्तु क्या ही अच्छा हो कि ऐसे अवसर बहुत कम आने पावें।

यह तो एक बड़ी मामूली बात है कि कोई भी, जो सोच सकता है और शब्दों को उचित स्थान पर रख सकता है, उसकी कहानियाँ पत्रिकाओं में छप जायँ, किन्तु ऐसी साधारण कहानियों की माँग बहुत कम है।

बहुत सी साधारण कहानियाँ तो इस कारण छप जाती हैं कि उनसे अच्छी सम्पादकों के पास मौजूद ही नहीं रहतीं। किन्तु यह आवश्यक है कि सम्पादक के आवश्यकतानुसार कहानियाँ लिख कर भेजी जायँ।

तो क्या यह सम्भव है कि कहानी लिखने का नियम सीखा जा सके ? कुछ ऐसी बातें हैं जो नहीं सिखाई जा सकतीं—जैसे कल्पना, या किसी वस्तु को सुन्दर और रोचक भाषा में वर्णन करना। इन गुणों के मौजूद होने पर, जो औसत दर्जे के भी पढ़े लिखे व्यक्तियों में पाये जाते हैं, किसी को भी इतनी शिक्षा दी जा सकती है कि उसकी कहानियाँ पत्रिकाओं में छपने लगें। ये कहानियाँ सम्भव है बहुत अच्छी न हों फिर भी उन पर पुरस्कार मिल सकता है।

बहुत से लेखक इस बात पर आश्चर्य करते हैं कि उनको अपने कार्य में क्यों हमेशा असफल होना पड़ता है। इसका कारण यह है कि लेखक कहानी लिखने और उसको बेचने के लिए ठीक मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं। बजाय इसके कि वे किसी ख़ास तरह की पत्रिका के लिए लिखने का अभ्यास करें और उसी ढंग पर लिखें, वे अपने ध्येय का बहुत ध्यान रखते हैं जो स्वयं उन्हें स्पष्ट नहीं मालूम रहता।

नये लेखकों की दूसरी ग़लती यह है कि वे आवश्यकता से अधिक उत्साही होते हैं। उत्तम श्रेणी या साधारण श्रेणी की पत्रिकाओं में विषय के विचार से बहुत बड़ा अन्तर पाया जाता है। बहुत ऊँचा आदर्श रखने की आवश्यकता नहीं है। आरम्भ में थोड़े ही से सन्तोष रखना चाहिए। बहुत से बड़े से बड़े लेखकों की कहानियाँ पहले-पहल साधारण साप्ताहिक पत्रों में ही छपी थीं।

साधारण श्रेणी के पत्रों में भी अपनी कहानी छप जाने का अच्छा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि इससे अपने ऊपर भरोसा होने लगता है और इस विचार से कि अपना लिखा हुआ शीघ्र प्रकाशित हो जायगा, लिखने में बहुत सहायता मिलती है। बहुत से लेखकों को यदि इस बात का विश्वास हो जाय कि उनकी कहानियाँ अवश्य ही प्रकाशित हो जायँगी तो वे आशातीत उन्नति करेंगे।

यदि यह पहले ही विचार कर लिया जाय कि कहानी किस पत्रिका के लिए लिखी जाय तो उसके तैयार होने पर उसके छपने में कोई विशेष बाधा न पड़ेगी। किन्तु, ऐसी भी कहानियाँ होती हैं जिनके सम्बन्ध में तुरन्त इस बात का ठीक ठीक विचार नहीं किया जा सकता कि वे किस पत्रिका के लिए उपयुक्त होंगी। उसका विशेष कारण यह है कि हिन्दुस्तानी पत्रिकाओं में अभी कोई दर्जा (Standard) नियत नहीं हुआ है, ऐसी दशा में लेखक को चाहिए कि वह जहाँ सबसे अधिक उचित समझे अपनी कहानी छपने के लिए भेजे।

कहानी लिखने से अच्छी आमदनी हो सकती है। चूँकि प्रतिपृष्ठ कहानी के लिए एक से लेकर चार पाँच रुपये तक मिल सकते हैं, इसलिए आठ या दस पृष्ठ की कहानी के लिए आठ या दस रुपये से लेकर चालीस या पचास रुपये तक मिल सकते हैं। इँग्लैंड और अमेरिका में प्रतिसहस्र शब्दों के लिए कम से कम पच्चीस रुपये से लेकर चालीस रुपये तक

मिलते हैं और एक एक साधारण लेखक की कहानियों पर ३००) या ४००) रुपयों तक का मिल जाना आश्चर्य की बात नहीं है। नामी लेखकों को तो एक एक कहानी लिखने के लिए ढाई या तीन हज़ार रुपये मिल जाना अधिक नहीं समझा जाता। इसके सिवा उनकी कहानियाँ दूसरी भाषाओं या देशों में छपीं तो कुछ और भी रुपये मिल जाते हैं। नतीजा यह निकलता है कि कहानी-लेखकों को अच्छी प्राप्ति हो सकती है, किन्तु सफलता के लिए धैर्य और शान्ति के साथ बुद्धि का प्रयोग करना आवश्यक है।

इसके पहले कि कोई लेखक कहानी लिखना आरम्भ करे उसे लेखन-कला के स्वाभाविक नियमों का तो अच्छा अनुभव होना चाहिए।

बड़े बड़े लेखकों ने कहानी लिखने के लिए कठिन से कठिन नियम बतलाये हैं, किंतु नये लेखकों को इन नियमों को देखकर घबड़ा न जाना चाहिए, क्योंकि यह नियम अधिकतर आदर्श का ही काम देते हैं और पत्रिकाओं की कहानियों के लिए अधिक लागू नहीं समझे जाते। पत्रिकाओं की कहानियाँ केवल कभी ही कभी साहित्य के उच्च आदर्श तक पहुँचती हैं। आर्थिक दृष्टि से नये कहानी-लेखक को तो केवल सम्पादकीय माँगों को ही मद्देनज़र रखते हुए साहित्यिक उलझनों से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि कहानी में साहित्य का उच्चभाव भी आ जाय तो सोने में सुगन्धि हो जायगी।

यही कारण है कि साहित्य के उच्च लेखकों की रचनायें साधारण पत्रिकाओं में न पसन्द ही की जाती हैं और न छपती ही हैं; क्योंकि उच्च कोटि की रचनाओं के समझने का क्षेत्र संकीर्ण ही होता है। सम्पादकों को कैसी कहानियों की आवश्यकता रहती है अब, इसी पर विचार किया जायगा।

रचनात्मक कल्पना कहानी लिखने की कला है, और कुछ हद तक यह सीखी जा सकती है। कहानी लिखने के कुछ ऐसे साधारण नियम हैं, जिनको हर एक सफल लेखक जान या अनजान में अवश्य ग्रहण कर लेता है। नये लेखकों की वे त्रुटियाँ जो कहानियों को भद्दी बना देती हैं आसानी से दूर की जा सकती हैं। बहुत कुछ ऐसा भी है जो नहीं सिखाया जा सकता। लेकिन हर एक मनुष्य जिसमें लिखने का माद्दा है, अपनी कहानियों को बहुत ही शीघ्रता से प्रकाशित करने योग्य बना सकता है यदि वह साधारण लेखन-कला का पालन करे।

चूँकि कहानियों के लिए कोई विशेष नियम निर्धारित नहीं किये गये हैं, इसलिए कोई भी दो लेखक किसी एक कहानी को एक ही तरह नहीं लिख सकते। और चूँकि कहानियाँ एक ही तरह की नहीं हो सकतीं, इसलिए लेखक को अपना व्यक्तित्व प्रकट करने के लिए काफ़ी मैदान मिल सकता है। इसी कारण नये लेखक को सफल लेखकों का मार्ग अनुसरण करने में और

उन नियमों को जिनको सफल लेखकों ने पालन किया है, पालन करने में कोई हिचकिचाहट न होनी चाहिए।

सबसे पहले कहानी लिखने के लिए एक कहानी की आवश्यकता होती है। नया लेखक कहेगा "हाँ यह तो ठीक ही है और साफ़ ज़ाहिर है।" लेकिन क्या यह सच है? अकसर सम्पादकगण इस बात की शिकायत करते हैं कि बहुत से नये लेखक शब्दों को एकत्रित कर देना ही कहानी लिखना समझते हैं। बहुत से नये लेखक अपनी रचनाओं पर ऐसा फूल उठते हैं कि इस बात को सोचना भूल से जाते हैं कि आया उनकी रचना में कोई कहानी भी है या नहीं और इस पर तुर्रा यह है कि नये लेखक अपनी कहानियों पर क़लम चलाना पाप समझते हैं। बेचारे सम्पादक के काम का कुछ भी ख़याल न करके अपनी आशा की तरङ्गों में प्रवाहित होकर अपनी रद्दी से रद्दी कहानियाँ सम्पादकों के ऊपर झोंक देते हैं और अपनी गाढ़ी कमाई के पैसे को भी व्यर्थ में टिकट और लिफ़ाफ़े में नष्ट करते हैं।

अधिकांश इसमें से नितान्त सत्य है। किन्तु सत्य की अकसर अवहेलना की जाती है। यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि यदि लेखक अपनी अस्वीकृत कहानियों को फिर से ईमानदारी के साथ देखने का कष्ट उठावें तो उनको मानना पड़ेगा कि उनकी अधिकतर कहानियाँ इसी लिए लौटाई गईं कि उनमें कहानियों के तत्त्व का अभाव था।

थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाय कि एक अच्छी कहानी की नींव (Plot) पड़ गई है। आगे चल कर एक अच्छे प्लाट का आदर्श और उसकी आवश्यकतायें पूरी तरह से वर्णन की जायँगी। मान लिया कि प्लाट बहुत चित्ताकर्षक, मौलिक और हृदयग्राही है—इसके बाद दूसरी कौन सी आवश्यक बात है?

कहानी इस तरह से लिखना चाहिए कि पाठक की उत्सुकता बनी रहे। इससे ये दोनों बातें हो जायँगी, (१) कहानी का स्वरूप नियमित रहेगा और (२) आकार या शैली जिसमें वह कहानी लिखी गई है, उसमें संगठन रहेगा। पाठक की उत्सुकता का मुख्य ध्यान रखना चाहिए क्योंकि कहानी का सारा दारोमदार इसी पर निर्भर है। बहुत सी और लिहाज़ से अच्छी कहानियाँ इसलिए नापसन्द की जाती हैं कि उनमें पाठकों के मन को लुभाने की पूरी सामग्री नहीं रहती। इस वास्ते इस ओर लेखक को विशेष ध्यान रखना चाहिए। किसी ख़ास आकर्षक ढङ्ग से या कहानी लिखने में कोई विशेष रोचकता उत्पन्न कर देने से पूर्ण नहीं तो बहुत कुछ मतलब हल हो जाता है। बहुत सी ऐसी साहित्यिक युक्तियाँ हैं कि जिनका प्रयोग करने से लेखक लाभ उठा सकता है। इनका वर्णन विस्तृत रूप से आगे किया जायगा।

यहाँ पर यह आवश्यक है कि हम इस बात को जान लें कि कहानी का साहित्य में कौन सा स्थान है। उपन्यास में प्लाट

की आवश्यकता होती है किन्तु इतनी नहीं जितनी कहानी में। इन दोनों में विस्तार का अन्तर नहीं बल्कि प्रकार का अन्तर है। कहानी और उपन्यास में जो वास्तविक अन्तर है उसको समझ लेने से लेखक को कहानी के मुख्य नियमों को सीखने में बहुत आसानी होगी।

कहानी उपन्यास का भावार्थ नहीं होती। इसका ध्येय केवल किसी एक भावना को जाग्रत कर देना है जो कि उपन्यास के लिए प्रायः असम्भव है। कहानी में कोई एक ही मुख्य विषय होता है, शेष सब गौण रहते हैं। वह विषय चाहे किसी अवस्था से सम्बन्ध रखता हो, चाहे किसी घटना का वर्णन हो या केवल किसी आचरण पर ही प्रकाश डालता हो; किन्तु इसका प्रभाव पाठक के हृदय पर पूरी तरह से पड़ना चाहिए। जैसा ही प्रभाव पड़ा कि कहानी का मतलब पूरा हुआ। इसी लिए यह असर बहुधा अन्त में डाला जाता है ताकि पाठक के हृदय पर यह अंकित हो जाय। किसी सफल कहानी में सब बातों का नतीजा यही प्रभाव डालने या लक्ष्य पर पहुँचाने का होना चाहिए।

कहानी में इस एकता की आवश्यकता के लिए (१) प्लाट उपयुक्त होना चाहिए और (२) वर्णन भी इसी बात का ध्यान रखकर होना चाहिए। बिना इस बात का विचार किये कहानी सारहीन होगी। हर एक कहानी जो कहानी कहलाने योग्य है, जाँचने पर इस गुण से युक्त मिलेगी।

कहानी में उपन्यास की अपेक्षा कथाओं का वर्णन बहुत सूक्ष्मता से किया जाता है। यदि किसी बात के कम कर देने से कहानी के भाव पर कोई मुख्य असर नहीं पड़ता तो उसको कदापि न रखना चाहिए। प्रत्येक शब्द अर्थयुक्त होना चाहिए कहानी में व्यर्थ बातों के वर्णन के लिए स्थान नहीं रहता। इसके विपरीत उपन्यास में बहुत सी ऐसी बातें होती हैं जिनकी आवश्यकता कहानी में नहीं होती। यही ख़ास बात है। कहानी को तो सिर्फ़ कहानी होना चाहिए।

कहानी कितनी बड़ी होनी चाहिए? कहानी में कितने शब्द होने चाहिए, इसके लिए संख्या नियत करने की आवश्यकता नहीं। साधारण तौर पर यह कहा जा सकता है कि कहानी तीन या चार पृष्ठ से लेकर बारह या पन्द्रह पृष्ठ तक हो सकती है। नये लेखक के लिए औसत दर्जे की कहानी सात या आठ पृष्ठ तक की होनी चाहिए। कहानी का विस्तार कुछ तो उसके विषय से सम्बन्ध रखता है और कुछ पत्रिकाओं की आवश्यकताओं पर।

ये बातें और कहानियों की अनिवार्य आवश्यकतायें प्रकाशित कहानियों को भली भाँति देखकर निर्धारित की गई हैं। कहानियों की उत्पत्ति पहले हुई, उसके नियम उनके आधार पर बने। अधिकांश सफल लेखक ऐसी ही रचनाओं को ध्यान में रखकर ठीक मार्ग पर चल सके हैं। जान में अथवा अनजान में इन्हीं कहानियों को देखकर

तथा नियमों का यथावत् उनके पालन करके वे सफल हुए हैं।

कहानी के लिए कोई साँचा नहीं है। हालाँकि हिन्दुस्तान में अब धीरे धीरे इस साँचे की तैयारी हो रही है और शायद कभी बन कर तैयार भी हो जाय। नये लेखकों को इस बात का पूरा विचार कर लेना चाहिए कि उनको तो उस सम्पादक की माँग को पूरा करना है जो साहित्यिक गेहूँ को भूसे से अलग करने के लिए बैठता है। ऐसी कहानियों को लिखने से क्या लाभ जिनका आज से सैकड़ों वर्ष बाद आदर हो। हमको तो ऐसी कहानियों के लिखने में समय देना चाहिए जो लिखते ही पसन्द की जायँ और बिक जायँ। यह आक्षेप किया जा सकता है कि हमारा दृष्टिकोण कहानी लिखने के सम्बन्ध में आर्थिक स्वार्थ की ओर अधिक रहा है, किन्तु इसका यह कारण तो स्पष्ट ही है कि अधिकतर लोग रुपये के लिए ही कहानी लिखते हैं।

---

# परिच्छेद २

## प्लाट

अधिकांश साधारण लेखक बहुधा प्लाट के विषय में बिना कुछ सोचे समझे लिखना आरम्भ कर देते हैं। उनके मस्तिष्क में जहाँ ज़रा सा विचार उत्पन्न हुआ कि प्रसन्नता से उछल पड़ते हैं और उसी पर कहानी लिख डालना चाहते हैं, चाहे वह विचार हो, चाहे केवल व्यवस्था हो और चाहे वह आवरण से सम्बन्ध रखता हो। कहानी का ढाँचा भुला दिया जाता है, जिसका परिणाम यह होता है कि कहानी बिलकुल असफल हो जाती है।

लिखने के पहले कहानी के बारे में अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए और उसके आकार को निश्चित कर लेना चाहिए। अनुभव और अभ्यास के द्वारा ये बातें मस्तिष्क में रख ली जा सकती हैं, किन्तु नये लेखक के लिए तो काग़ज़ पर इन विचारों का लिख लेना आवश्यक है।

कहानी का प्लाट उसके उस ढाँचे को समझना चाहिए, जिसमें चरित्रचित्रण, बातचीत और विवरण आदि का कोई उल्लेख न हो। प्लाट को "विषय" न समझ लेना चाहिए, "विषय" तो कहानी के तत्त्व को कहते हैं। कहानी के तत्त्व के आधार पर प्लाट या कहानी का पूरा विवरण दिया जाता है।

प्लाट और विषय में जो अन्तर है वह साधारण होने पर भी बहुत आवश्यक है। प्रत्येक नये लेखक को, यदि वह ध्यान-पूर्वक देखे तो इस बात का पता चल जायगा कि अच्छी कहानियों में प्लाट के अतिरिक्त उसका विषय स्पष्ट ज़ाहिर होता रहता है। साधारण लेखक भी कहानी के भिन्न भिन्न भागों को जोड़ कर ढाँचा तैयार कर लेते हैं; किन्तु उसमें वह चमक लाना जिससे कहानी अमर हो जाय सिद्धहस्त लेखक हो का काम है, जिन्होंने अभ्यास करके ही यह योग्यता प्राप्त की है। इस-लिए नये लेखकों को निराश न होना चाहिए।

नये लेखक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि उसका पहला कर्तव्य यह है कि उसकी कहानियाँ पाठकों का मनोरञ्जन कर सकें। और यह तभी संभव हो सकता है जब कहानी की नींव सुन्दर प्लाट से दी गई हो।

प्लाट क्या है? किसी वस्तु को समझने के लिए केवल परिभाषा ही से काम नहीं चलता। पहले यह देखा जाय कि कौन सी वस्तुएँ प्लाट नहीं हैं। यह एक साधारण निबन्ध नहीं है, जिसमें एक घटना के बाद दूसरी घटना घटित होती जाय। तथापि ऐसी घटनायें भी अच्छे लेखक के द्वारा कभी कभी विचित्र विनोद उत्पन्न कर देती हैं। वास्तव में यह एक निबन्ध है जो लेखक की कला के द्वारा ऐसा पेचीदा और आकर्षक बना दिया जाता है कि पाठक का मन आपसे आप उस ओर आकर्षित हो जाता है। अच्छी कहानियों का श्रेष्ठ गुण यह है

कि पाठक दुविधा में रहे और लेखक अपनी लेखन-कला-द्वारा उलझी हुई घटनाओं को इस ढंग से रक्खे कि उलझनें धीरे धीरे पाठकों पर खुलती चली जायँ—यही कहानी की कला का अनिवार्य वा सर्वोत्तम गुण है, जो हर एक कहानी में खुलना आवश्यक है।

एक आकर्षक और संतोष-जनक प्लाट की आवश्यकतायें बहुत साधारण होती हैं। उसे युक्तियुक्त, संभव, स्वाभाविक, मनोरञ्जक और असाधारण होना चाहिए, आरम्भ ही से रोचक हो और उसकी रोचकता क्रमशः बढ़ती हुई अंत में सबसे अधिक हो जाय।

एक प्लाट की आवश्यकताओं के बतलाने का सबसे सरल तरीक़ा यह होगा कि उदाहरण के लिए एक सफल कहानी का प्लाट ले लिया जाय और उसकी उत्पत्ति, वृद्धि और बनावट का परिचय ठीक ठीक दे दिया जाय। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, प्लाट उस मुख्य विषय से लिया जाता है जो कहानी का आधार-स्तम्भ होता है। मान लिया जाय कि हमको कोई कहानी बलिदान के विषय में लिखना है ( यह एक विषय है कि जिसमें हर एक मनुष्य को दिलचस्पी होती है ) बलिदान साधारणतः किसी एक ही व्यक्ति का होता है, इसलिए नया से नया लेखक भी इस बात को समझ सकता है कि ऐसी कहानी में दो तीन पात्रों से अधिक की आवश्यकता न होगी। इसमें यह भी विदित है कि किसी निकटसम्बन्धी की

आवश्यकता होगी जिनमें आपस में प्रेम हो जैसे माता और पुत्र, या पति और पत्नी। पति और पत्नी का दृष्टान्त लीजिए क्योंकि पत्रिकाओं में युवक पति और पत्नी का चरित्र अधिक ध्यान से पढ़ा जाता है।

दूसरी बात सोचने की यह होगी कि क्यों पति ने पत्नी के वास्ते या पत्नी ने पति के वास्ते बलिदान किया। समझदार लेखक इसका ध्यान रक्खेगा कि अगर उसको सिर्फ़ साधारण कहानी लिखना है कि पत्नी ने पति की सहायता के लिए कैसे अनेकों बलिदान किया या पति ने पत्नी के हित के लिए कैसे कैसे अपने ऊपर कष्ट उठाये तो यह आवश्यक होगा कि कुछ ऐसी पेचीदगी हो जाय कि जिसमें पाठक की उत्सुकता बनी रहे। यह ऐसी ज़रूरी बात है कि जिसका ध्यान लेखक को हर समय रहना चाहिए—कि घटनाओं को सीधे सादे ढंग से, या प्राकृतिक रूप से वर्णन करने पर पाठकों को सच्चा विनोद न प्राप्त होगा और वे लेखक की मुट्ठी से बाहर हो जायँगे। कहानी में ऐसी गुत्थियाँ डाली जायँ कि उनको सुलझाने के लिए पाठक उत्सुकतापूर्वक पढ़ता ही चला जाय। दोनों पात्रों के चरित्र ऐसे क्यों न दिखाये जायँ कि वे एक दूसरे को आश्चर्य में डालनेवाले हों तथा एक दूसरे की भलाई के लिए अपने ऊपर कष्ट उठायें।

अभी तक कहानी की सबसे अधिक आवश्यक बात अर्थात् तीव्रतम स्थिति (Climax) और आकार पर हमने ध्यान नहीं

दिया। कहानी में क्लाइमेक्स की विशेषता का तो पहले ही कुछ वर्णन दिया जा चुका है। यह वही स्थान है जहाँ पर पाठक की उत्सुकता सबसे अधिक हो जाती है। इस पर ध्यान देना चाहिए। और आश्चर्य पर ध्यान रखना ही हमारा मार्ग निर्धारित करता है। दोनों ने जो एक दूसरे के लिए त्याग किया है वह एक ही समय में प्रकट होना चाहिए। और दोनों का समावेश भी साथ ही होना चाहिए; इस बात पर विचार करने से पाठक की उत्सुकता बढ़ेगी और कहानी लेखक को समाप्त करने में सहायता मिलेगी। यह कौतूहल परिश्रम करने और सोचने से लाया जा सकता है, अपने आप जागृत नहीं होता।

हमारी इस कहानी के युवक पति और पत्नी अनजान में एक दूसरे के प्रेम के प्रयत्न को विफल कर देंगे। इस प्रकार पति अपना प्यारा बेला बेचता है, ताकि अपनी पत्नी के लिए जड़ाऊ कंघी ख़रीद दे जिसे वह अपने लम्बे केशों में पहिनने के लिए बहुत दिनों से इच्छुक थी। जब कि पत्नी अनजान में अपने बालों को काट डालती है और उन्हें बेचकर अपने पति के बेला के लिए कमानी ख़रीद लाती है, जिसको वह बहुत दिनों से ख़रीदना चाहता था पर ग़रीबी के कारण नहीं ख़रीद सका था।*

इसके बाद कहानी की रचना का एक ज़रूरी स्थान आता है। असल में जैसे ही हम क्लाइमेक्स पर पहुँचते हैं कहानी का मतलब हल हो जाता है और पाठक को आगे कुछ जानने की

*ओ० हेनरी की एक कहानी।

इच्छा नहीं रह जाती। कहानी के वास्ते यह घातक समझा जायगा यदि यह दिखलाया जाय कि कुछ दिन बाद कैसे उनके दिन लौटे और कैसे पत्नी ने फिर अपने बाल बढ़ा लिये और पति ने अपने इच्छानुकूल बेला ख़रीद लिया। कहानी कैसे ख़तम करना चाहिए इसके बारे में आगे चल कर विचार किया जायगा। यहाँ पर इस बात की विशेषता पर ध्यान दे देना काफ़ी होगा कि क्लाइमेक्स के पहुँचने पर पाठक के ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सब कहानियाँ एक ही ढाँचे में नहीं ढल सकतीं। क्योंकि कहानियाँ बहुत क़िस्म की होती हैं। सम्प्रति रोचक कहानियों के बारे में विचार करना है क्योंकि इस बात की कहानियाँ अधिकतर पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के लिए पसन्द की जाती हैं। उदाहरणार्थ, कुछ कहानियों में आचरण पर विचार किया जाता है, जिसमें चरित्र-चित्रण की प्रधानता होती है किन्तु रोचकता बहुत कम होती है। ऐसी कहानियाँ बहुत उच्च कोटि की पत्रिकाओं में कभी कभी प्रकाशित होती हैं। वह ऐसे बड़े लेखकों की रचना होती हैं जिनको वह दर्जा प्राप्त हो जाता है कि पाठकों का अधिक ख़्याल न करके अपने ही मनोरञ्जन के लिए लिखें। नये लेखक के लिए सबसे अच्छा ढङ्ग लिखने का यह है कि उसकी कापी सम्पादक को पसन्द आये; और आधुनिक पत्रिकाओं को देखने से यह तुरन्त विदित हो जाता है कि रोचक कहानियाँ ही अधिकतर प्रकाशित होती हैं। बहुत सी कहानियाँ

और क़िस्म की भी होती हैं जिनकी सफलता प्लाट पर नहीं बल्कि साहित्यिक योग्यता अथवा कोई मुख्य वायुमण्डल या हास्य-रस पर निर्भर होती है। नये लेखक के लिए सबसे अच्छी बात यह होगी कि वह अपनी कहानी का प्रभाव डालने के लिए अच्छे प्लाट का सहारा ले।

बहुत से नये लेखकों को जो अच्छे प्लाट की आवश्यकताओं को समझ भी लेते हैं, उपयुक्त प्लाट को ढूँढ़ने में कठिनाई पड़ती है जिनको वे सफलतापूर्वक कहानी में प्रयोग कर सकें। यह कोई आसान काम नहीं है; किन्तु प्लाट के ढूँढ़ने में इतनी कठिनाई नहीं होती, जितनी कि यह चुनने में कि कौन सा प्लाट उपयुक्त है और कौन सा त्यागने योग्य है। प्लाट का ढूँढ़ लेना तो आसान है। किसी कहानी के प्लाट की सामग्री तो दैनिक पत्रों में मिल जाती है।

उदाहरणार्थ हाल में दैनिक पत्र-द्वारा मालूम हुआ कि पं० विष्णु दिगम्बर गायनाचार्य का स्वर्गवास हो गया। इस पर यह याद आया कि जब पिछली बार इलाहाबाद आये थे, तो वे कहते कि "भजु मन रामचरण सुखदाई" वाले गाने की फ़रमाइशों से वे ऊब गये थे। वे कहा करते थे कि अच्छा होता कि उन्होंने उस गाने को कभी न गाया होता। हालाँकि उनकी प्रसिद्धि का एक मुख्य कारण यही गाना था। इसी पर एक कहानी के निर्माण की सामग्री मिल सकती है।

कर्तव्य और मित्रता के बीच में किसको श्रेष्ठ समझा जाय इसके विषय में एक विलायती पत्र में समाचार निकला था, जिस पर एक बहुत सुन्दर कहानी की रचना हो सकती है:—

"मिस्टर ओकानर और मिस्टर ओहीगिन्स में परम मित्रता थी। मिस्टर ओहीगिन्स आयलैंड के न्याय-विभाग के मन्त्री थे। मिस्टर ओकानर अपने फाँसी के ६ महीने पहले मिस्टर ओहीगिन्स के ब्याह के अवसर पर "बेस्टमैन" थे।

"मिस्टर ओहीन्स अपने पदाधिकार के कारण मिस्टर ओकानर की फाँसी के ज़िम्मेदार थे। मिस्टर ओहीगिन्स के परम मित्र मिस्टर ओकानर के बचाने के लिए लोगों ने हर प्रकार से प्रयत्न किया, किन्तु उन्होंने क्षमा करने से इनकार कर दिया और मिस्टर ओकानर को मृत्यु की सज़ा दी गई।

"कर्तव्य और मित्रता की दुःखद प्रतिद्वंद्विता ने मिस्टर ओहीगीन्स के अन्तःकरण को बड़ा क्लेश पहुँचाया। किन्तु उस समय दुख की सीमा का ठिकाना न रहा, जब कि मिस्टर ओकानर का वसीयतनामा खोला गया और उसमें यह पाया गया कि उसने अपनी सारी सम्पत्ति उसी मंत्री के नाम लिख दी थी, जो उसकी फाँसी का उत्तरदायी था।"

इसी तरह से और भी सैकड़ों बातें हैं जिनके द्वारा कहानी-रचना की सामग्री मिल सकती है। बहुधा एक कहानी से दूसरी कहानी के लिए मसाला मिल जाता है। इसलिए आधुनिक पत्रिकाओं के पढ़ने से बहुत लाभ हो सकता है,

अर्थात् किस प्रकार की माँग है यह प्रकट हो जाता है और प्लाट के लिए सामग्री भी मिल जाती है। अक्सर कहानी पढ़ते समय प्लाट को अधिक मनोरञ्जक बनाने के लिए उत्तम विचार की झलक भविष्य में आ जाती है, जिससे लेखक को नई रचना करने की स्फूर्ति और उत्साह प्राप्त होते हैं।

प्लाट के लिए सामग्री अक्सर अकस्मात् मिल जाती है, जैसे कभी समाचार-पत्र पढ़ने से, कभी साधारण बातचीत से, कभी अचानक घटनाओं के देखने से, और कभी साधारण अनुभव से। संभव है कि नये लेखक को यह प्लाट की सामग्री साधारण बातों में न दिखाई दे, किन्तु प्लाट ढूँढ़ने का अभ्यास उसको निपुण बना देता है। नवीनता से कल्पना-शक्ति बढ़ती है। प्लाट की सामग्री मिलने पर उसका उलट-फेर हो सकता है, घटाया-बढ़ाया जा सकता है और इसी प्रकार अपने मतलब का बनाया जा सकता है।

यह मान लेना पड़ेगा कि मौलिक प्लाट कठिनाई से मिलते हैं; हालाँकि यह एक विचित्र बात है कि पुराने प्लाट को नया जामा आसानी से पहनाया जा सकता है और उसको सम्पादक प्रसन्नता से पत्रिकाओं में स्थान देते हैं। अक्सर नया जामा पुरानी सूरत ही बदल देता है। आदर्श प्लाट चुभता हुआ, मौलिक और स्वाभाविक होता है। इन गुणों में से स्वाभाविक गुण होना सबसे अच्छा माना जाता है।

असंभव प्लाट कभी कभी संभव सा प्रतीत हो सकता है; किन्तु ऐसी बातें कहानी लिखने के संबन्ध में नहीं दिखाई जा सकती हैं। वास्तव में कहानी लिखने का कौशल व्यक्ति-गत लेखक के ऊपर इतना निर्भर है कि यह ख्याल करना कि कहानी लिखने की कला का प्रत्येक अंश सिखाया जा सकता है अनधिकार-चर्चा होगी। कल्पना-शक्ति, व्यक्तिगत शैली, उसका प्रवाह, विनोद, तर्क की निपुणता और परिणाम ये बातें कभी नहीं सिखाई जा सकतीं। तब भी नया लेखक निषेध-क्रिया से बहुत कुछ सीख सकता है। नये लेखकों में सबसे बड़ी कमज़ोरी उनके प्लाट में पाई जाती है, और चूँकि इसमें सबसे अधिक उन्नति हो सकती है, और चूँकि उत्तम प्लाट अच्छी कहानी की जान है, इस वास्ते नये लेखक को कला के इस अङ्ग पर विशेष ध्यान देना चाहिए—कहानी का यह बहुत आवश्यक अङ्ग है।

बिना मनोरञ्जकता और असाधारणता के कहानी का सफल होना कठिन होता है। आज-कल की कहानियों में प्लाट ही आधारस्तम्भ है।

---

# परिच्छेद ३

## चरित्र-चित्रण

पात्रों के चरित्र को बिना अच्छी तरह समझे कभी कहानी आरम्भ न करना चाहिए; क्योंकि चरित्र के आधार पर घटनायें होती हैं। और क़हानी में घटनायें ही लिखी जाती हैं।

हालाँकि पत्रिकाओं की कहानियाँ पढ़ने से यह प्रकट होता है कि कहानी में प्लाट सबसे प्रधान वस्तु है, किन्तु नये लेखक चरित्र-चित्रण में अकसर असफल रहते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि कहानी की सफलता अधिकतर उसकी मनोरञ्जकता पर निर्भर है। यदि कहानी नीरस है, पात्र निर्जीव हैं, और वर्णन फीका है तो उसको कौन पढ़ेगा ? अब यह बात स्पष्ट हो गई कि सबसे प्रधान स्थान कहानी को सफल बनाने में प्लाट है, और उसके बाद फिर चरित्र-चित्रण ही ऐसी वस्तु है जिससे पाठकों का मनोरञ्जन होता है।

यह समझ लेने से आसानी पड़ेगी कि जो दो मुख्य तरह की कहानियाँ पत्रिकाओं में छपती हैं उनमें क्या अन्तर होता है। पहली क़िस्म की कहानी घटनामय होती है जिसकी सफलता के लिए यह आवश्यक है कि घटना बराबर होती जाय। इस

प्रकार की कहानियों में चरित्र-चित्रण के लिए बहुत कम अवसर मिलता है। दूसरी तरह की कहानी वह है जिसमें आचरण का चित्र खींचा जाता है—इसमें चरित्र-चित्रण का स्थान प्लाट और घटनाओं से अधिक आवश्यक समझा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि घटनामय कहानियों में चरित्र-चित्रण का बिलकुल अभाव हो या आचरण-सम्बन्धी कहानियों में घटनायें या प्लाट न हों क्योंकि अच्छी कहानियों में दोनों बातों का होना आवश्यक है।

आचरण-सम्बन्धी कहानियों में लेखक पात्र या पात्रों के चरित्र-चित्रण और विवरण पर अधिक ध्यान देते हैं; इनमें लेखक प्लाट को उतना ही स्थान देता है जिसमें उसके कहानो के पात्र प्लाट के द्वारा पूरी तरह से ज़ाहिर हो जायँ। बहुत से आधुनिक लेखक इसी प्रकार की कहानियों में प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। लेखक का कहानी में मुख्य और पहला साधन साधारण मनुष्यों की जीवनचर्या है, और इससे यह सिद्ध होता है कि चरित्र-चित्रण हर प्रकार की कहानियों का एक आवश्यक अंग है। कला के विचार से ऐसी कहानियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए; किन्तु इस प्रकार की कहानियाँ पत्रिकाओं में अधिक पसन्द नहीं की जातीं। पत्रिकाओं के देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि घटनामय कहानियाँ पसन्द होने के कारण अधिक छपी हैं। इस वास्ते नये लेखक को आरम्भ में सादी और घटनामय कहानियों के लिखने का

अभ्यास करना चाहिए; और आचरण-सम्बन्धी कहानियाँ जिनकी कठिनाई के कारण अनुभव की अधिक आवश्यकता होती है, बाद में लिखने का प्रयत्न करना चाहिए।

समझदार पाठक कहानी के पात्रों का आचरण जानने के लिए अधिक नहीं तो उतना अवश्य उत्सुक रहते हैं जितना उनका अन्तिम परिणाम जानने के लिए। यह तभी संभव है जब लेखक पाठकों में अपने पात्रों के चरित्र के विषय में रुचि उत्पन्न कर दे। अपने इस कौशल में सफलता प्राप्त करने के लिए लेखक को चाहिए कि वह अपने पात्रों के चरित्र अपने मस्तिष्क में अच्छी तरह रक्खे कि जिसमें उसको स्वयम् यह ज्ञात होता रहे कि किस अवसर पर पात्र कैसे और क्या करते दिखाई देंगे। यदि पात्रों का चरित्र स्वयं लेखक ही के दिमाग़ में अनिश्चित होगा तो वह कैसे आशा कर सकता है कि उसका चित्र पाठकों के सामने साफ़ साफ़ खिंच सकेगा। यदि पात्र विश्वासयोग्य न प्रतीत होंगे तो पाठक कहानी पर विश्वास न करेगा; और जैसे ही इस धोके के सत्य का पर्दा फटा, कहानी को कोई न पूछेगा। इसलिए लेखक को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कहीं उसके पात्र गुड़िया के समान न बन जायँ।

चरित्र-चित्रण क्या है? चरित्र-चित्रण लेखक की लेखनी द्वारा खींची हुई किसी की वह तसवीर है, जिसके पढ़ते ही पाठक के समीप वह सजीव हो जाता है और वह उसके साथ

हमदर्दी करने लगता है। पात्र की रचना अनेक प्रकार से हो सकती है, वर्णन-द्वारा (जो सबसे कम असर पैदा करता है); संकेत से (जो काफ़ी प्रभावशाली तरीक़ा है); बातचीत से; और कहानी की घटनाओं द्वारा। वर्णन-द्वारा पात्र का चरित्र प्रकट करना सबसे कमज़ोर तरीक़ा है, क्योंकि पाठकों के ऊपर इस बात का अधिक प्रभाव पड़ता है जब कि वे स्वयं पात्रों का चरित्र बिना लेखक के वर्णन किये ही केवल बात-चीत से अनुमान कर सकें। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वर्णन बिलकुल न किया जाय, बल्कि और बातों के साथ थोड़ा सा वर्णन करना बहुत प्रभावशाली हो सकता है। पाठक अकसर यह जानना चाहते हैं कि पात्र देखने में कैसा जान पड़ता है और पात्र की शकल-सूरत का वर्णन उसके स्वभाव को बहुत कुछ बतला देता है। यह अच्छा होगा कि नामी लेखकों की कहानियाँ पढ़ी जायँ और यह देखा जाय कि वे कैसे यह असर पैदा कर देते हैं। उदाहरणार्थ, आजकल की कहानियों में ऐसे ही कभी किसी युवती के घूँघरवाले बाल या मृग के समान बड़े नेत्र या सुन्दर, सुडौल शरीर की आकृति का विस्तृत वर्णन मिलेगा; बल्कि लेखक उसके शरीर के आकर्षक गुणों का संकेत करके छोड़ देते हैं।

नये लेखक को इस प्रधान गुण की ओर ध्यान देना चाहिए कि जिन मनुष्यों को वह देखे उनको ध्यानपूर्वक देखे और उनके आचरण पर अच्छी तरह विचार करे। आचरण का

वर्णन किताबें नहीं सिखा सकतीं। तरह तरह के मनुष्यों से मिलने और उनको देखने से कहानी की पात्र-रचना के लिए सामान मिल जाता है। अकसर लोग यह पूछते हैं कि क्या लेखक उन मनुष्यों के चरित्र का वर्णन अपनी कहानियों में सचमुच करते हैं, जिनसे वे मिलते-जुलते रहते हैं। कभी कभी लेखकों ने अपने मिलनेवालों के चरित्रों का कहानियों में प्रयोग किया है, किन्तु वास्तव में उनके चरित्र केवल ढाँचे का काम देते हैं और कहानी में वे ऐसे गढ़ लिये जाते हैं कि वे पहचाने नहीं जा सकते।

लोगों के स्वभाव देखने से, उनका पहिनावा देखने से, उनके बोलचाल के ढङ्ग से और उनकी ख़ास कमज़ोरियां इत्यादि को ध्यान से देखने से नये लेखक को कहानी के पात्र के लिए बहुत सी क़ीमती सामग्री मिल सकती है। इसके बाद इस ज़रूरी बात की आदत डालना चाहिए कि मस्तिष्क-द्वारा उत्पन्न हुए चित्र काग़ज़ पर कैसे ठीक ठीक शब्दों द्वारा प्रकट किये जायँ।

जब लेखक किसी की शकल-सूरत का चित्र काग़ज़ पर खींचना चाहे तो यदि वह पहले अपने मस्तिष्क में उस चित्र को खींच कर और उसका ठीक ठीक वर्णन कर दे, तो पाठक पर उचित प्रभाव डालने में सफल होगा। यह उतना सहज नहीं जितना जान पड़ता है; किन्तु परिश्रमपूर्वक अभ्यास से इच्छित फल प्राप्त हो सकता है।

नये लेखकों के पुराने अधिक प्रयोग किये हुए चरित्र के वर्णन को न लिखना चाहिए, क्योंकि ऐसे वर्णन पढ़ते पढ़ते पाठक ऊब गये होंगे और फिर से वही पढ़ने में उनको आनन्द न आवेगा। यह बिलकुल सम्भव है कि लेखक अपने विचारों को सरल सीधे और नये ढङ्ग से प्रकट करके पूरा असर डाल दें। साधारण वर्णन में रूपक और अलङ्कार की भरमार न होनी चाहिए; इसकी कहानी में कोई आवश्यकता नहीं है कि अमुक पात्र "गदहे सा बेवक़ूफ़ है" या अमुक स्त्री "पारे की तरह चंचल है" इत्यादि।

यह अवश्य मानना पड़ेगा कि कहानी में चरित्र-चित्रण का उतना मौक़ा नहीं रहता जितना उपन्यास में। विस्तार के भय से कहानी में हर एक बातों को संक्षिप्त करना पड़ता है, और इसी वजह से चरित्र-चित्रण में भी चरित्र का इत्र ही निकाल कर रखना पड़ता है।

प्रत्येक शब्द ज़ोरदार होना चाहिए, एक शब्द भी व्यर्थ न रखना चाहिए। इसके दोहराने में कोई हर्ज नहीं है कि कहानी में व्यर्थ और अनुपयुक्त बातों के लिए स्थान नहीं है।

चरित्र-चित्रण गूढ़ विषय है और लेखक की साहित्यिक योग्यता का द्योतक है। कोई भी लेखक अपनी कल्पना-शक्ति से और शब्दों के ठीक उपयोग से पढ़ने योग्य कहानी तैयार कर सकता है; किन्तु उस लेखक के लिए, जो साहित्यिक चरित्र-चित्रण की कला में उन्नति करना चाहता है उसको और भी बातों की आवश्यकता है। एक प्रधान लेखक

का कथन है कि दस व्यर्थ शब्दों की अपेक्षा एक उपयुक्त शब्द कहीं अधिक प्रभावशाली होता है।

नये लेखक को अब यह बतलाने की आवश्यकता नहीं रही कि पात्रों का चरित्र कहानी के अनुसार होना चाहिए— जैसे, कहानी की घटनाओं के आधार पर पात्रों के कार्य हों इसके लिए यही केवल काफ़ी न होगा कि कहानी में एक युवक खड़ा कर दिया जाय, एक युवती भी हो, कोई गुण्डा हो और दो चार साधारण पात्र हों; युवक की वीरता पर पाठक मुग्ध हो जायँ और गुण्डों की बदमाशी के लिए कोई धारणा भी हो। पाठक कहानी में मनुष्यों का चरित्र पढ़ना चाहते हैं, न कि कठपुतली का नाच देखना।

चरित्र-चित्रण ऐसा गम्भीर विषय नहीं है जैसा कि साधारण तौर पर समझा जाता है। कहानी में हर एक नई घटना के होने पर लेखक को अपने पात्रों के चरित्र में कोई नई बात दिखाने का अवसर मिल जाता है। पात्रों की हर एक हरकत और हर एक बात जो उनके मुँह से निकलती है, उनके चरित्र पर प्रकाश डाल सकती है। किसी पात्र का घबड़ाकर ठुड्डी पर हाथ रखना पाठक को उसकी चिन्ता का अधिक परिचय देता है बनिस्बत इसके कि वर्णन से पृष्ठ का पृष्ठ काला किया जाय।

इसके अतिरिक्त बातचीत से भी चरित्र सफलता के साथ बतलाया जा सकता है।

## परिच्छेद ४

### कथोपकथन

कथोपकथन कहानी का वह भाग है जिसके सम्बन्ध में थोड़े से नियम जान लेने पर काम चल जायगा। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह छोटी सी बात है, बल्कि कहानी के और अंशों की भाँति यह भी अपने स्थान पर आवश्यक है। जिन कहानियों में बातचीत रूखी, अनावश्यक और जिससे किसी पात्र के चरित्र पर प्रकाश नहीं पड़ता अच्छी नहीं समझी जाती। कथोपकथन में वह स्वाभाविकता होनी चाहिए, जिसके द्वारा कहानी का भाव स्वयं विदित हो जाय, और बातचीत से बोलनेवाले का चित्र पाठक की आँखों के सामने आजाय।

मालूम नहीं क्यों कहानी का कथोपकथन नये लेखकों को घबड़ा देता है। इसकी वजह शायद यह है कि नये लेखकों को लिखकर बातचीत का भाव प्रकट करने की आदत नहीं होती। कथोपकथन में भी कहानी लिखी जा सकती है, किन्तु यदि छपी हुई कहानियाँ पढ़ी जायँ तो कथोपकथन को कहानी में रखने की आवश्यकता ज़ाहिर हो जायगी। पाठकों को अकसर पृष्ठों पर बातचीत छपी हुई देखकर पढ़ने की रुचि हो जाती है। किसी का कहना है कि "वह किताब किताब नहीं कि

जिसमें बातचीत न हो।" कहानी को सजीव बनाने में कथोपकथन काफ़ी सहायता पहुँचाता है।

कथोपकथन किसी मुख्य ध्येय का सूचक होना चाहिए न कि कहानी को बढ़ाने के लिए अनावश्यक बात। किसी पात्र के मुख से कोई बात सिर्फ़ बतला देना कथोपकथन नहीं कहा जाता।

प्रश्न हो सकता है कि तब कथोपकथन का कहानी में क्या प्रयोजन है। उसके तीन विशेष प्रयोजन हैं। (१) पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालना, (२) दृश्य और प्लाट की तैयारी में सहायता देना, (३) कहानी की घटनाओं की गति को तीव्र बनाना और उनकी स्थिति रखना।

चरित्र-चित्रण में पात्रों का चरित्र स्पष्ट हो जाता है। चरित्र पर प्रकाश डालने का इससे अच्छा तरीक़ा क्या हो सकता है कि पात्र स्वयं अपनी बातचीत से अपने चरित्र का परिचय दे दें। पाठक पात्रों पर अपनी राय उसी प्रकार से क़ायम कर लेता है जैसे कि साधारण जीवन में वह लोगों से मिलकर और उनसे बातचीत करके अपनी राय क़ायम कर लेता है। इस वास्ते कथोपकथन में सावधानो और विवेक से काम लेना चाहिए। लेखक को यह स्मरण रखना चाहिए कि जब वह कथोपकथन को प्रयोग में लाता है तो उसके पात्र पर सबकी दृष्टि पड़ती है, और हर एक शब्द जो वह बोलता है विशेष महत्त्व रखता है। कभी कभी कथोपकथन साधारण वर्णन

से कहीं अधिक काम देता है। कथोपकथन कहानी के पात्र का व्यक्तित्व प्रकट करने के लिए उत्तम ढंग है।

लेखक, पाठकों के सामने जिस पात्र की तसवीर खींचना चाहता है यह आवश्यक है कि पहले वह उसकी ठीक ठीक तसवीर अपने दिमाग़ में खींच ले। मान लिया जाय कि कोई लड़की अपनी सौतेली माँ से बहुत डरती हो। अगर कहानी उसकी दिमाग़ी हालत के वर्णन से आरम्भ की जाय तो पाठक को अवश्य विश्वास हो जायगा; किन्तु बातचीत से यदि मेल-जोल प्रकट हुआ तो प्रतिकूलता आ जायगी। उसकी बात-चीत से लड़की का भय ज़ाहिर होना चाहिए—वर्णन से संकेत का प्रभाव कहीं अधिक पड़ता है।

कथोपकथन के द्वारा चरित्र-चित्रण के वर्णन करने के सिल-सिले में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहानी के सब अंक आपस में ऐसे गुथे और मिले-जुले रहते हैं कि कभी कभी उनका एक दूसरे से भिन्न करना असम्भव सा हो जाता है। उदाहरण के लिए उसी माँ और सौतेली लड़की को लेकर उनकी बातचीत का थोड़ा सा अंश देखें।

"तुमसे तुम्हारे भाई से कब भेंट हुई थी?" सौतीली माँ ने लड़की को एकाएक डाँट कर पूछा।

कुछ देर तक लड़की भौचकी सी खड़ी रही।

"जब से—जब से मामा के यहाँ से वापस आई हूँ तब से दोबारा भेंट नहीं हुई।"

लड़की शान्तिपूर्वक उत्तर देना चाहती थी किन्तु सौतेली माँ की कड़ी निगाह देख कर उसको आँख मिलाने तक का साहस न हुआ।

इस बातचीत में दो तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं, "एकाएक डाँट कर पूछना" सौतेली माँ के चरित्र पर प्रकाश डालता है; "लड़की का थोड़ी देर भौचकी सी खड़ी रहना" उसके घबड़ाये हुए उत्तर को सुनने के लिए पाठक को तैयार कर देता है; और "जब से—जब से" दोहरा के कहने से तो चित्र ही सामने खिच गया। यह साधारण बात होते हुए भी बहुत असर डालनेवाली है। अंतिम जुमला पढ़ने से पाठक के दिमाग़ में माँ बेटी के व्यवहार का पूरा चित्र खिंच जाता है।

कहानी के साधारण पात्रों के कथोपकथन में उतने ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती जितनी कि प्रधान पात्रों की बातचीत में, क्योंकि उनके प्रत्येक शब्द मतलब से भरे रहते हैं। प्रधान पात्रों की तो बातचीत ही से प्रकट हो जाना चाहिए कि वे कहानी के प्रधान पात्र हैं। कहानी के पात्रों का पाठकों से ऐसा परिचय करा देना चाहिए कि जब वे बोलें पाठक स्वयं जान लें कि यह अमुक पात्र का कथन है। कथोपकथन का दूसरा अभिप्राय दृश्य और प्लाट की तैयारी में सहायता पहुँचाना होता है। चरित्र-चित्रण के मुक़ाबिले में कथोपकथन का यह भाग अधिक आवश्यक नहीं है और न इसके अधिक वर्णन की आवश्यकता है। तो भी किसी

दृश्य के वर्णन में सत्यता प्रकट करने के लिए यह बहुत उपयोगी साधन है।

पत्रिकाओं की कहानियों के लिए कथोपकथन का तीसरा साधन सबसे अधिक आवश्यक है। चूँकि घटना-प्रधान कहानियाँ बहुत पसन्द की जाती हैं और उनमें घटनाओं की तीव्रता के लिए कथोपकथन अच्छी सहायता दे सकता है, इस वास्ते लेखक को इस साधन से पूरा काम लेना चाहिए।

कहानी की गति क्लाइमेक्स पर पहुँचने के लिए धीरे धीरे बढ़ती ही जानी चाहिए। कहानी की गति बढ़ाने में कथोपकथन अच्छी सहायता देता है। क्लाइमेक्स के समीप जब पाठक की उत्सुकता बहुत बढ़ जाती है कहानी में ढीलापन न आना चाहिए, और यह ढीलापन बचाने के लिए कथोपकथन लेखक के लिए बहुत ही उपयोगी होता है। कथोपकथन के दो चार वाक्यों-द्वारा कहानी की गति में जो तेज़ी आसकती है वह लम्बे वर्णनों से नहीं आसकती।

देखने में कथोपकथन सरल जान पड़ता है किन्तु लिखते समय लेखकों को उसमें कठिनाई पड़ती है।

कथोपकथन में असर पैदा करने के लिए सबसे अच्छी विधि यह है कि प्रसिद्ध लेखकों की कहानियों का भलीभाँति अध्ययन करके, उन पर विचार किया जाय और वही असर अपनी कहानियों में पैदा करने का प्रयत्न किया जाय।

कुछ प्रतिभाशाली लेखक अपने कथोपकथन में आसानी से सुन्दर भाव उत्पन्न कर देते हैं, किन्तु बहुतेरे बहुत परिश्रम करने पर भी सुन्दर भाव नहीं उत्पन्न कर पाते। सफलता प्राप्त करने के लिए कथोपकथन स्वाभाविक होना चाहिए; यदि कथोपकथन में स्वाभाविकता न आने पावे तो उसे छोड़ कर फिर से लिखना चाहिए। यदि अभ्यास किया जाय और प्रसिद्ध लेखकों का कथोपकथन ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय तो यह असम्भव है कि नये लेखक को उनके लिखने में आसानी न हो।

अभ्यास के लिए एक अच्छा तरीक़ा यह है कि लेखक अपने जान-पहचान के मनुष्यों को पात्र चुने और उनकी आपस की बातचीत अपनी मनगढ़न्त बनाकर लिखे। इस प्रकार के अभ्यास से कथोपकथन के सिवाय लिखने की शैली में भी लचीलापन आजायगा और कल्पना-शक्ति बढ़ेगी।

कथोपकथन का प्रयोग कहानी में किस समय होना चाहिए इसके लिए कोई ख़ास नियम नहीं है। हर एक कहानी में अवसर और आवश्यकता के अनुसार कथोपकथन का प्रयोग करना चाहिए। अवसर और आवश्यकता का चुनाव लेखक की राय पर निर्भर है और यदि उसने कहानियाँ ध्यानपूर्वक पढ़ी हैं तो उसकी राय में ग़लती होने की कम गुञ्जाइश है।

---

# परिच्छेद ५

## कहानी की रचना

कहानी की हर रचना में रूप और तरतीब होना चाहिए। इसी नियम के अनुसार आसानी के लिए कहानी तीन भागों में विभाजित की जा सकती है। (१) कहानी का प्रारम्भ, (२) उसका आकार, (३) और उसकी समाप्ति। इस प्रकार साधारण विभाग कर लेने से कहानी लिखने में आसानी होती है; हालाँकि कलापूर्ण और अच्छी कहानी का विभाग नहीं किया जा सकता। अच्छे लेखकों की कहानियों में भी ये विभाग पाये जाते हैं, हालाँकि वे इन नियमों का स्वाभाविक ही पालन करते हैं।

इसके पहले कि इन विभागों पर विचार किया जाय यह अधिक अच्छा होगा कि हम पहले इस बात पर विचार करें कि कहानी किस किस तरह से लिखी जा सकती है। कहानियाँ कई तरह से कही जा सकती हैं। (१) जब लेखक दर्शक की भाँति लिखता है; (२) लेखक स्वयं जब कहानी का एक पात्र होता है; (३) जब कहानी पत्रों-द्वारा लिखी जाती है; (४) जब कुल कहानी कथोपकथन के ही रूप में लिखी जाती है; (५) जब कहानी रोज़नामचे के रूप में लिखी जाती है और भी

कुछ साधारण तरीक़े हो सकते हैं किन्तु उनके लिखने की आवश्यकता नहीं है।

सबसे अधिक नं० (१) और उसके पश्चात् नं० (२) की कहानियाँ अधिक पसन्द की जाती हैं और इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की कहानियाँ पसन्द न होने के कारण लिखी भी कम जाती हैं। सुन्दर कहानियों के लिखने में अधिक नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं है, लेकिन नये लेखकों को नियमबद्ध लिखने से आसानी रहती है।

दर्शक की हैसियत से कहानी लिखने में सबसे अधिक आसानी होती है, क्योंकि लेखक एक ही समय में दो या अधिक घटनाओं का वर्णन कर सकता है और अपने पात्रों के विचार और बातचीत को कह सकता है। इस प्रकार की कहानी में लेखक एक तरह से आड़ में रहता है और उसकी मौजूदगी का हाल पाठक पर ज़ाहिर नहीं हो पाता और कहानी साधारण तरीक़े से कही जा सकती है।

ऐसी कहानियों में जिनमें लेखक स्वयं कहानी के पात्रों में से एक होता है, हालाँकि पहले क़िस्म की कहानी के बराबर यह नहीं पसन्द की जाती, तब भी चूँकि इनमें निश्चयात्मक गुण अधिक होते हैं, इसलिए इन मेल की कहानियों का भी पूरा रिवाज है। बहुत से लेखक इस प्रकार की कहानी इसलिए लिखते हैं कि उसमें स्वाभाविकता लाने में आसानी पड़ती है। पूरा असर डालने के लिए पात्र के मुँह से कहानी कहलाने में

पहले क़िस्म की कहानी की अपेक्षा इसमें अधिक कठिनाई पड़ती है।

आधुनिक कहानियों में अक्सर ये तीन बातें पाई जाती हैं :—

( १ ) प्रारम्भ या प्रस्तावना।
( २ ) कहानी का आकार।
( ३ ) क्लाइमेक्स और कभी कभी निर्वहण (Denouement)।

कहानी में थोड़ा सा नाटकीय गुण भी होना चाहिए—इसमें समय और स्थान का ख़ास ध्यान रखना पड़ता है। कहानी की घटनाओं को समाप्त करने के लिए थोड़ा ही समय लेना चाहिए, इसमें बहुत से वर्षों का व्यतीत होना अच्छा नहीं मालूम होता है। इसी तरह से स्थान में भी विस्तार करना ठीक नहीं, यदि लेखक चाहे तो कहानी की पूरी घटना एक कमरे में रचकर समाप्त कर सकता है। ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि कहानी में एकता बनी रहे। कहानी की घटनाओं में कोई रुकावट न होनी चाहिए और लगाव क़ायम रहना चाहिए। क्लाइमेक्स पर पहुँचने के लिए कहानी की गति में तीव्रता बढ़ती जानी चाहिए; और जब कहानी वहाँ पर पहुँच जाय तो पाठक के सामने कहानी का सारा रहस्य खुल जाय। क्लाइमेक्स पर पाठक की उत्सुकता की हद हो जाती है और यहाँ पर पहुँचने के बाद कहानी वास्तव में समाप्त हो जाती है।

कहानी के प्रारम्भ और आकार के पहले क्लाइमेक्स के संबन्ध में इसलिए विचार किया जा रहा है कि यह सबसे अधिक आवश्यक है और पूरी कहानी इसी के आधार पर निर्भर रहती है; क्योंकि क्लाइमेक्स के पहले जो कुछ लिखा जाता है वह सिर्फ़ क्लाइमेक्स की सारी उत्सुकता को प्रकट करने के लिए मार्ग तैयार करता है। नये लेखक को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि कहानी का क्लाइमेक्स कहानी का जान होता है, और शेष सब अङ्ग उसके अधीन होते हैं।

कहानी के आरम्भ में कुछ वाक्य ऐसे ही जान पड़ते हैं जैसे किसी आगन्तुक से पहली बातचीत। इन वाक्यों में वह गुण होना चाहिए कि जिसमें पाठक को कहानी पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो जाय। आरम्भ में ढीलेपन का प्रभाव पाठक और सम्पादक दोनों ही पर बुरा पड़ता है। पाठक तो यह चाहते हैं कि बिना किसी बड़ी भूमिका के कहानी तुरन्त आरम्भ हो जाय।

प्रारम्भ में रोचकता के अतिरिक्त कहानी के ध्येय का भी संकेत होना चाहिए—वह ऐसा हो कि पाठक को इस बात का ज्ञान हो जाय कि उसको किस प्रकार की कहानी पढ़ने को मिलेगी। हालाँकि यह बिलकुल आवश्यक नहीं है कि कहानी का विषय दो ही चार वाक्यों से प्रकट हो जाय, तब भी यह अधिक अच्छा होता है कि अवसर मिलते ही कुछ कहानी के विषय में इशारा दे दिया जाय।

लेखक का यह प्रयत्न होना चाहिए कि कहानी देखकर पाठक को उसके पढ़ने की इच्छा हो जाय। इस वास्ते कहानी का प्रारम्भ इस प्रकार होना चाहिए कि उसमें रोचकता या कुछ समा बाँधनेवाली बातें मौजूद हों। कहानी का प्रारम्भ तीन प्रकार से हो सकता है।

( १ ) किसी वस्तु के वर्णन या उसकी प्रस्तावना से।
( २ ) कथोपकथन से।
( ३ ) घटना का एकाएक वर्णन करने से।

किन्तु इन तीनों बातों में आकर्षण होना चाहिए और संभव हो तो कहानी के रहस्य का संकेत भी हो जाना चाहिए।

प्राचीन ढङ्ग की सूचित करनेवाली प्रस्तावना से कहानी आरम्भ करना आजकल के सम्पादक और पाठक नापसन्द करते हैं। पहले थोड़ा सा वर्णन करके कहानी आरम्भ करना आसान भी है और प्रभावशाली भी। वह वर्णन चाहे दृश्य का हो, चाहे किसी पात्र का और चाहे किसी विषय का या चाहे तीनों का साथ ही हो, पर वह अरुचिकर न हो, जिससे पाठक को समझने में कठिनाई और घबराहट हो।

कथोपकथन से कहानी का प्रारम्भ करना उतना आसान और प्रचलित नहीं है, जितना कि समझा जाता है। कथोपकथन से कहानी का प्रारम्भ बहुत सुन्दर होना चाहिए या उससे प्रारम्भ ही न होना चाहिए। चूँकि कथोपकथन से

चरित्र-चित्रण हो सकता है, दृश्य बतलाया जा सकता है या घटना का वर्णन किया जा सकता है, इसलिए अगर कहानी का प्रारम्भ इससे किया जाय तो इनमें कोई ऐसी बात चुन लेनी चाहिए कि जिसमें पाठक आकर्षित हो जायँ।

तीसरे तरीक़े पर चलने में अर्थात् घटना के एकाएक वर्णन करने में लेखक के ऊपर यह उत्तरदायित्व आ जाता है कि वह घटनायें कहानी-रूपी माला में उसके दानों का काम दें और उन्हीं से कहानी का रूप खड़ा हो जाय। यह सबसे सरल तरीक़ा है और नये लेखक आसानी से इसको सीख सकते हैं।

कभी कभी पाठकों के दिल पर प्रभाव डालने के लिए इस तरह से लिख दिया जाता है कि कोई अनोखी बात लिख दी गई या कोई जोशीली बात कह दी गई। इसका अभिप्राय केवल पाठकों के चित्त को आकर्षित करना है।—

'कहानी कैसे आरम्भ करना चाहिए?' इस प्रश्न का उत्तर कहानी के विषय से मिल जाता है। कुछ कहानियाँ ख़ासकर हास्यरस की, या प्रेम की कथोपकथन से आरम्भ होकर अच्छा प्रभाव डालती हैं; और शेष कहानियाँ किसी वस्तु के वर्णन से या एकाएक आरम्भ कर दी जाती हैं।

कहानी का प्रारम्भ कहाँ पर समाप्त होता है और उसमें आकार कहाँ पर आ जाता है, इसका निर्णय करना कठिन है,

क्योंकि कहानी वास्तव में एक ही वस्तु है, इसमें विभाग केवल समझाने के लिए कर लिया गया है।

कहानी का आकार स्वयं कहानी है। कहानी के लिखने के तरीक़े में अक्सर अन्तर होता है। कुछ लेखक पहले कहानी के विषय का संक्षिप्त उल्लेख कर लेते हैं और बाद को उसी के आधार पर पूरी कहानी लिख डालते हैं। दुहराते समय कहानी को जितना कम करने की आवश्यकता होती है उतना कम कर देते हैं। यह तरीक़ा नये लेखकों के लिए ठीक नहीं मालूम होता, क्योंकि उनको अपना लिखा हुआ काटने में बड़ा असमंजस होता है। उन्हें इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि अनुभवी लेखक अपनी लिखी कहानी में बहुत कुछ कम कर देता है, क्योंकि वह इस बात को ख़ूब जानता है कि कहानी में जितने ही थोड़े शब्द हों उतना ही अच्छा।

हर एक कहानी का कोई अपना ख़ास तरीक़ा होना चाहिए। आदर्श कहानी लिखने में सादगी सबसे अच्छा मार्ग है। इस बात के ध्यान देने की आवश्यकता है कि कहानो की चाल में किसी प्रकार की रुकावट न आने पाये और यदि कहीं लाई भी जाय तो पाठक की उत्सुकता बढ़ाने के लिए। कहानी में इधर-उधर की व्यर्थ बातें न लिखी जायँ, केवल पाठकों का मनोरञ्जन बढ़ाने का ध्यान रक्खा जाय और धीरे धीरे वह मनोरञ्जन बढ़ता ही जाना चाहिए। इसी लिए अक्सर अच्छी कहानियाँ एक ही बार बैठकर संपूर्ण कर दी जाती हैं। किन्तु नये लेखक

को अपनी कहानी आरम्भ करने में बहुत शीघ्रता न करनी चाहिए। और कहानी के विषय और प्लाट को अच्छे प्रकार दृढ़ कर लेने पर ही लेखनी उठानी चाहिए और पात्रों का चरित्र ऐसा मस्तिष्क में रख लेना चाहिए कि लिखते समय उनके चरित्र-चित्रण में कोई कठिनाई न पड़े और लेखक अपने इच्छानुसार पात्रों से काम ले सके।

पहले ही से बिना अच्छी तरह सोचे-विचारे और यह ख्याल करके कि जब जो उचित होगा लिखते जायँगे, कहानी लिखना शुरू कर देना कहानी को सफल बनाने में कठिनाई पैदा करना है। कहानी लिखते समय जब कभी कोई नई बात सूझ जाय और उसके द्वारा कहानी अधिक ज़ोरदार बन सके तो उसका प्रयोग करने में कोई हर्ज नहीं है।

कहानी लिखने के लिए केवल क़लम, दवात और काग़ज़ लेकर बैठ जाना और यह आशा करना कि लिखते समय सुन्दर विचार और प्लाट सब मन में आते जायँगे, ठीक नहीं है, क्योंकि कहानी लिखने का यह तरीक़ा नहीं है।

किसी अच्छी कहानी से लाभ उठाने के लिए उसको एक बार साधारण पाठक की तरह पढ़ जाना चाहिए और दुबारा उसको ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि उस कहानी के लेखक ने अपनी कहानी को सफल बनाने में किन बातों का उपयोग किया है। ध्यानपूर्वक अच्छे लेखकों की कहानी पर विचार कर लेने के बाद नये लेखक की बहुत सी अड़चनें

स्वयं दूर हो जाती हैं, और वह पाठक की उत्सुकता में विघ्न डाल कर उसे भङ्ग नहीं करता, बल्कि उसे सदैव बढ़ाता ही जाता है जो कि अच्छी कहानी का विशेष गुण है।

सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहानी के प्लाट का वर्णन ठीक तौर से हो। प्लाट के वर्णन करने में अधिक कठिनाई नहीं पड़ती, और न नये लेखक को पड़ेगी; किन्तु कहानी का उद्देश्य यह होना चाहिए कि उसको पढ़ते समय हृदय में गुदगुदी सी पैदा होती रहे—सफल कहानी में यह बात हमेशा पाई जाती है, किन्तु साधारण कहानियों में इसका अभाव रहता है।

कहानी की गति या चाल उसके प्लाट से भिन्न वस्तु है। प्लाट में घटना के परिणाम का अनुमान, कारण और कार्य, कर्म और फल के द्वारा किया जाता है। कहानी लिखने में इस बात की आवश्यकता है कि प्लाट को पेचीदा और सांकेतिक बना दिया जाय कि जिसमें उत्सुकता आ जाय। उदाहरण के लिए यह कहना कि गोली चली, किसने चलाया और कोई मरा या नहीं इसका उत्तर न देने पर, कहानी में उत्सुकता बढ़ जाती है और पाठक उस भेद को जानने के लिए पढ़ता ही जाता है। अभिप्राय यह है कि किसी घटना के घटित होने पर उत्सुकता होती है।

किसी कहानी में कितनी घटनायें पाठकों की उत्सुकता बढ़ाने के लिए होनी चाहिए, यह प्लाट के ऊपर निर्भर है।

कहानी में अधिक नहीं तो एक घटना अवश्य होनी चाहिए। घटना की अधिकता से कहानी में मनोरञ्जकता बढ़ जाती है, क्योंकि हर घटना के बाद पाठक की उत्सुकता और अधिक हो जाती है। किन्तु इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि क्लाइमेक्स पर पहुँचते पहुँचते कहानी की गति तीव्र होती जाय।

नये लेखक यदि छपी हुई कहानियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तो उनको मालूम हो कि अच्छे लेखक किस प्रकार से घटनाओं का प्रयोग कहानी में करते हैं। कोई साधारण बात घटना नहीं कही जा सकती है। घटना उसे कहते हैं जिससे कहानी और उसके प्लाट पर असर पड़ता है और वह साधारण बातें जो कहानी में सिर्फ़ जोड़ने का काम देती हैं, घटना नहीं कही जा सकतीं।

लेखक को घटना और साधारण बात का अन्तर अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए, क्योंकि तभी कहानी की तरतीब देने में आसानी होगी और कहानी की तरतीब गठी और चुस्त होना चाहिए। हालाँकि यह हमेशा आवश्यक नहीं होता कि उत्सुकता उत्पन्न करने के लिए तरतीब बनावटी हो, तो भी यह न भूलना चाहिए कि तरतीब के ऊपर ही उत्सुकता का होना निर्भर है—घटनायें कभी कभी यह बात स्वयं ही उत्पन्न कर देंगी।

घटनाओं को इस प्रकार लिखना चाहिए कि उससे जो

नतीजा निकले वह संभव हो, और हालाँकि पाठक इस बात का अनुमान करता रहे कि यही नतीजा निकलेगा, पर उसको इस बात का निश्चय न हो, क्योंकि निश्चय हो जाने पर कहानी पढ़ने की उसको आवश्यकता न मालूम होगी। इससे यह सिद्ध हुआ कि यदि कहानी में घटनाओं की तरतीब ठीक तरह से की जाय तो पाठक की उत्सुकता के लिए अपने आप सामग्री एकत्रित हो जायगी।

कहानी में किस बात को न लिखना चाहिए या छोड़ देना चाहिए, यह भी ध्यान देने योग्य बात है। नये लेखक को अपनी रचनाओं में से कुछ भी निकाल देना बुरा मालूम होता है और दुःख पहुँचता है, हालाँकि आवश्यकता इस बात की है कि जो शब्द, वाक्य, प्रकरण या घटना कहानी में अनावश्यक हो, फ़ौरन निकाल दिया जाय।

कहानी में कुछ बातें पाठक को विचार करने के लिए छोड़ देने में कोई हानि नहीं है, क्योंकि पाठक बहुत सी बातों का नतीजा स्वयं ही निकाल लेते हैं, और इस प्रकार कहानी का शब्दों द्वारा अप्रकट चित्र पाठक पूरा कर लेते हैं और उनके वह चित्र पूरा कर लेने में रुकावट न डालना चाहिए।

पाठक कहानी का एक प्रधान अङ्ग है जिसका विचार लेखकों को बहुत कम होता है। वह कहानी विनोद के लिए पढ़ता है, और बातों के लिए नहीं, इस वास्ते कहानी में ऐसी बातें न होनी चाहिएँ जिससे उसको उलझन हो—न तो वह व्यर्थ

की टीका-टिप्पणी पसन्द करता है और न भद्दा वर्णन। यदि पाठक को साहित्यिक बातें पढ़ना है तो वह कहानी नहीं पढ़ेगा। नये लेखक अगर इस बात पर ध्यान रक्खे कि वे कहानी उन पाठकों के लिए लिखते हैं, जो सिर्फ़ कहानी पढ़ना चाहते हैं, न कि उच्च श्रेणी का साहित्य, तो हिन्दुस्तानी कहानियों का दर्जा बहुत ऊँचा हो जाय।

वास्तव में यदि लेखक पाठक के मनोरञ्जन की सामग्री ठीक तौर पर एकत्रित कर दें और उसमें पाठक का मनो-विनोद हो, तो वह चाहे जिस प्रकार अपनी कहानी लिखें, वह ठीक समझी जायगी।

---

# परिच्छेद ६

## क्लाइमेक्स

कहानी में क्लाइमेक्स की प्रधानता से इनकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रारम्भ चाहे जितना रोचक हो, तरतीब चाहे जितनी सुन्दर हो या घटनाओं में चाहे जितनी तीव्रता हो, किन्तु पाठक का मन क्लाइमेक्स पर पहुँचने के लिए उत्सुक रहता है। यदि क्लाइमेक्स उचित स्थान पर नहीं लाया जाता, या उसकी ठीक तैयारी नहीं की जाती, या वह अनावश्यक वस्तु सिद्ध हो जाता है, या असम्भव सा होता है और यथार्थ नहीं समझा जाता तो पाठक निराश हो जाते हैं और कहानी का महत्त्व उनकी दृष्टि में नहीं रह जाता। कहानी या लेख, चाहे दार्शनिक हों, चाहे वैज्ञानिक हों या चाहे साधारण हों सबमें रोचकता का एक केन्द्र होना चाहिए और यही क्लाइमेक्स है।

कहानी की बनावट के लिहाज़ से क्लाइमेक्स का स्थान सबसे ऊँचा है, सबका दारमदार इसी पर है, क्योंकि कहानी के सभी अंग इसी के आधीन हैं। कहानी की समाप्ति पर पाठक के चित्त पर कोई विशेष प्रभाव पड़ जाना चाहिए, चाहे वह आश्चर्यजनक हो, चाहे उससे शान्ति मिले चाहे उसके

परिणाम से संतोष हो, या चाहे डर ही क्यों न उत्पन्न करने-वाला हो।

कहानी विना क्लाइमेक्स के सारहीन है, और हालाँकि किसी वस्तु की परिभाषा वताना कठिन है फिर भी ऐसी कहानी प्रचलित और रोचक कहानियों की श्रेणी में नहीं रक्खी जा सकती—ऐसी कहानी कहानी के अलावा चाहे और जो कुछ कही जाय। इसका लेखक विशेष ध्यान रक्खें, क्योंकि कहानी का यह अत्यन्त आवश्यक अङ्ग है।

यह आवश्यक नहीं है कि क्लाइमेक्स ही पर कहानी हमेशा समाप्त हो जाय—यह ख़ास घटना के घटित होने का स्थान है; निर्वहण (denouement) और कहानी के रहस्य उसके वाद थोड़े से शब्दों में प्रकट किये जा सकते हैं। निर्वहण को संक्षेप में निवाहना चाहिए, क्योंकि पाठक को कहानी के रहस्य के समझने के अतिरिक्त और विशेष वातों के जानने की इच्छा नहीं रहती। किन्तु, यदि पाठक स्वयं रहस्य को विना वतलाये अनुमान कर सके तो उसके ज़ाहिर करने की कोई आवश्यकता नहीं—नये लेखक को इस वात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि क्लाइमेक्स के वाद अनावश्यक वातों के आने से कहानी का सारा मज़ा किरकिरा हो जाने का भय रहता है। कभी कभी क्लाइमेक्स के वाद कुछ वाक्यों को बतौर उपसंहार के लिखने की आवश्यकता होती है, किन्तु यह कहानी के विषय पर निर्भर है और लेखक की राय पर यह वात छोड़ी जा सकती है।

कहानियाँ कई प्रकार से समाप्त की जा सकती हैं। आश्चर्य-जनक कहानियों में पाठक की दुविधा मिटाने के लिए समाप्ति भी अकस्मात् हो जाना चाहिए, इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कहानी का अन्त चाहे जैसा आश्चर्य-जनक और अकस्मात् हो पर वह हो सम्भव। सामाजिक कहानियाँ तथा गल्पें सुखान्त हो सकती हैं, दार्शनिक तौर पर समाप्त हो सकती हैं, नये तरीक़े से शिक्षापूर्ण हो सकती हैं, या ऐसे मज़ेदार तरीक़े से समाप्त की जा सकती हैं कि पाठक का मन बाद में भी प्रफुल्लित रहे।

कहानी की समाप्ति चाहे जैसे हो पर लेखक को बड़ी सावधानी से निभाना चाहिए, क्योंकि क्लाइमेक्स पहुँचते पहुँचते कहानी की गति में बड़ी तीव्रता आ जाती है और पाठक का कौतूहल बहुत बढ़ जाता है—इस वास्ते ऐसे समय पर एक एक वाक्य, बल्कि एक एक शब्द तुला हुआ होना चाहिए। लेखक को कहानी के इस अंश पर पूरा ध्यान देना चाहिए। इस मौक़े पर इधर-उधर की या व्यर्थ बातें नहीं लाई जा सकतीं; कहानी की गति बिना रुकावट के निश्चित और तीव्र होनी चाहिए।

बहुत से अच्छे लेखकों का यह विचार है कि कहानी का अन्तिम भाग ऐसा आवश्यक है कि इसको अलग से लिख लेना चाहिए, कुछ लोग तो अपना पहले से निर्धारित किया हुआ परिणाम कहानी के लिखने के पहले लिख लेते हैं, उसमें यह

लाभ है कि कहानी की रचनी लेखक के अधिकार में रहती है, अन्यथा इसके विपरीत होने का 'अन्देशा रहता है। परिणाम को आरम्भ में लिख लेने से यह आसानी होती है कि लेखक कहानी उसी के अनुसार तैयार करके अपने इच्छित परिणाम पर पहुँच जाता है।

क्लाइमेक्स के पहले जो कुछ लिखा जाता है वह उसी की तैयारी के लिए लिखा जाता है।

हालाँकि परिणाम पहले ही से निश्चित कर लिया जाता है, किन्तु आरम्भ में पाठक से जितना ही अधिक छिपाया जाय उतनी ही कहानी की उत्तमता बढ़ती है। कहानी की समस्याओं को पाठकों के सामने निपुणता से हल कर देने में ही लेखक की योग्यता समझी जाती है, और कहानी का सफल या असफल होना भी इसी पर निर्भर है।

क्लाइमेक्स अद्भुत किन्तु विश्वास करने के योग्य होना चाहिए। यदि कहानी का परिणाम बहुत सोचने पर समझ में आवे तो वह कहानी सफल नहीं समझी जाती। कहानी का परिणाम ऐसा निश्चित होना चाहिए, जैसा कि गणित के प्रश्नों का उत्तर। वक्त से पहले परिणाम की स्पष्टता कहानी के गुणों का सर्वनाश कर देती है। बार बार इस बात का दोहराना अनुचित न होगा कि कहानी जहाँ तक सम्भव हो संक्षेप में लिखी जाय और निरर्थक शब्दों का प्रयोग बिलकुल न किया जाय।

लेखक में जितना ही नाटकीय गुण होगा कहानी भी उतनी ही उत्तम होगी, क्योंकि यह गुण लेखक का कौशल समझा जाता है। क्लाइमेक्स के लिए जो दुविधा और उत्सुकता होती है, उसमें नाटकीय गुण साहित्यिक गुण की अपेक्षा विशेष माना जाता है।

इस प्रकार कहानी में क्लाइमेक्स, निर्वहण और उपसंहार देखने में भिन्न भिन्न वस्तु प्रतीत होने पर भी वास्तव में उनमें बहुत कम अन्तर है; कभी कभी तो कहानी में ये तीनों बातें एक ही रूप में पाई जाती हैं। कहीं कहीं क्लाइमेक्स के बाद जब निर्वहण या उपसंहार लाया जाता है, वह केवल अलङ्कारमात्र होता है।

* * *

हालाँकि कहानी का प्रारम्भ, आकार और समाप्ति पर अलग अलग विचार किया गया है, तब भी लेखक को यह अच्छी तरह स्मरण रखना चाहिए कि वास्तव में ये तीनों वस्तुएँ एक दूसरे से इतनी मिली हुई होती हैं कि न तो वह अलग की जा सकती हैं और न उन्हें अलग समझना चाहिए। कहानी के लिखने के विषय में यह अच्छा समझा जाता है कि वह बैठकर एक ही मर्तबे में लिख दी जाय। कहानी अगर दुहराने पर ठीक न मालूम हो तो उसके दो चार दिन बाद फिर से देखना चाहिए; और अगर दोहराने में साधारण त्रुटियों के सिवा और भी कुछ कमी मालूम हो तो तात्त्विक संशोधन से अच्छा तो यह होगा कि कहानी को फिर से लिखा जाय। कहानी ज़ोर ज़ोर पढ़ने से लेखक को स्वयं त्रुटियों के जानने में आसानी होगी।

## परिच्छेद ७

### शैली

लेखक अपने विचारों को जिस प्रकार प्रकट करता है, उसी का नाम शैली है। इस वास्ते जितने लेखक होंगे उतनी ही शैली होगी। अच्छी शैली चाहे जितनी व्यक्तिगत हो, उसमें कुछ तात्त्विक गुणों का होना अनिवार्य है।

शैली स्वयं तो बहुत अच्छी वस्तु है किन्तु कहानी की और आवश्यकताओं की अपेक्षा उसका दर्जा कहानी में साधारण समझा जाता है, क्योंकि बढ़िया प्लाट पर लिखी हुई कहानी में साधारण प्लाट पर उच्च शैली में भी लिखी हुई कहानी से उत्तम समझी जाती है—वास्तव में कहानी वही सफल समझी जाती है जिसमें कहानी के वर्णन किये हुए गुणों का समावेश हो, न कि शैली की उत्तमता।

इसका अर्थ यह नहीं है कि शैली बिलकुल नगण्य वस्तु है; मतलब सिर्फ़ यह है कि यदि लेखक बहुत अच्छी भाषा नहीं लिख सकता तो कहानी लिखने में उसको विशेष अड़चन न पड़ेगी। कहानी तो केवल कहानी ही है, पर शैली द्वारा लेखक के व्यक्तित्व का पता चलता है। साधारण भाषा में भी व्यक्तिगत शैली हो सकती है और उसके लेखक को बहुत लाभ

हो सकता है। हिन्दुस्तान के बड़े और प्रसिद्ध लेखकों में व्यक्तिगत शैली होते हुए भी भाषा सरल पाई जाती है। सरल भाषा में लिखी हुई कहानी से एक यह भी लाभ होता है कि सर्वसाधारण उसको पढ़कर आनन्द उठाते हैं। लेखक यदि सरल और बिलकुल शुद्ध भाषा में कहानी लिखे तो यही भाषा उसकी शैली बन जायगी और पसन्द की जायगी।

कहानी के लिए यही शुद्ध और सरल भाषा उपयुक्त होती है, क्योंकि वर्णन में सादगी, सरलता और सीधी बात को सीधी तरह से कह देने में जितना ज़ोर आ जाता है उतना घुमाव फिराव से कहने में नहीं। नये लेखक अक्सर सीधी बात को सीधी तरह से कह देने में हिचकते हैं, और साधारण छोटे शब्दों के स्थान पर क्लिष्ट और बड़ा शब्द ढूँढ़ते हैं और अलङ्कारिक भाषा लिखने का प्रयत्न करते हैं, जिससे कहानी का मज़ा जाता रहता है।

अच्छा लिखने के लिए ठीक ठीक सोचने की बड़ी आवश्यकता है। यदि लेखक स्पष्ट नहीं सोच सकता तो वह स्पष्ट लिख भी नहीं सकता, क्योंकि जब दिमाग़ ही में विचार स्पष्ट नहीं है तो लिखने में कैसे स्पष्टता आ सकती है।

प्रत्येक लेखक को अपनी निज की शैली बनाने का लक्ष्य रखना चाहिए। दूसरे लेखकों की शैली को ध्यानपूर्वक पढ़ने से अपनी शैली बनाने में बड़ी सहायता मिलती है। किसी

दूसरे लेखक की शैली सफलतापूर्वक अनुकरण नहीं की जा सकती, फिर भी उसको ध्यानपूर्वक पढ़ना और औरों की शैली से तुलना करना नये लेखक के लिए बहुत लाभकारी है। बड़े लेखकों की ग़लतियों पर अधिक आक्षेप नहीं किया जाता, किन्तु नये लेखक को इस प्रकार की ग़लतियों से हमेशा सावधान रहना चाहिए।

अच्छी शैली बनाने से नहीं बनती हालाँकि हर एक लेखक अपनी शैली में उन्नति कर सकता है। यदि भाषा में कमज़ोरी है तो वह आसानी से दूर की जा सकती है। साधारण तौर पर भाषा को अच्छी बनाने के लिए अधिक पढ़ने से काम चल जाता है, किन्तु अक्सर देखा गया है कि जितना पढ़ना लेखक के लिए आवश्यक है उतना वह नहीं पढ़ते, और उनकी संख्या तो बहुत ही न्यून है जो पढ़कर वास्तविक लाभ उठाते हैं। उत्साही लेखक को हर एक विषय की पुस्तकों का अच्छी तरह ध्यान-पूर्वक अध्ययन करना चाहिए, आधुनिक कहानियाँ और उपन्यास अधिक पढ़ना चाहिए, क्योंकि उनके पढ़ने से कल्पना-शक्ति के अतिरिक्त शब्द-ज्ञान और शैली की उत्तमता में भी उन्नति होगी।

पढ़ने के साथ साथ लिखने का भी अच्छा अभ्यास करना चाहिए। लेख आदि के लिखने से गद्य की शैली में उन्नति होगी और नये लेखकों की रचनाओं में जो अक्सर विषमता पाई जाती है वह जाती रहेगी।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि सादगी शैली के लिए सबसे अधिक उपयोगी है, यदि 'फावड़ा' कहना है तो 'फावड़ा' कहना चाहिए न कि 'लोहे का एक औज़ार जो मिट्टी खोदने के काम में आता है', या 'खनित्र' आदि क्लिष्ट और अप्रचलित शब्द।

शैली वस्तुत जल्द नहीं बन जाती और न ऐसी आशा ही करना ठीक है। साहित्यिक शैली वर्षों के परिश्रम से बनती है। लिखने में ख़ूब अभ्यास करने से शैली में धीरे धीरे व्यक्तित्व का समावेश होता है।

शैली के उत्तम बनाने का यह सबसे उत्तम तरीक़ा मालूम होता है कि लिखते समय शैली का बिलकुल ध्यान न रक्खा जाय, और सादगी और सरलता के साथ जो कुछ लिखना है लिख दिया जाय। सोचना यह चाहिए कि क्या लिखना है, न कि किस तरह से लिखना है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह हुआ कि कहानी लिखी जाय तो शैली अपने आप बन जायगी।

कहानी की भाषा के सम्बन्ध में कहानी-लेखकों को इस बात का मुख्य ध्यान रखना चाहिए कि आज-कल हिन्दुस्तानी भाषा उस हिन्दी या उर्दू से अधिक पसन्द की जाती है जिसमें संस्कृत, फ़ारसी या अरबी के शब्दों की भरमार हो। भाषा का अर्थ केवल यह है कि जो जन-साधारण की समझ में आसानी से आ जाय और पढ़े-लिखे भी उससे आनन्द उठायें। कहानी

में भला उस भाषा से क्या प्रयोजन है जिसके शब्दों के अर्थ जानने के लिए कोष की आवश्यकता पड़े। अभिप्राय यह है कि साधारण और सरल भाषा जो सबके समझने योग्य हो अधिक प्रभाव डालनेवाली होती है।

---

## परिच्छेद ८

## कहानी के विषय में अन्य विशेष बातें।

### (१) कहानी का शीर्षक।

कहानी का शीर्षक कहानी पर एक अच्छा प्रभाव डालता है। इसलिए कहानी-लेखक को इस बात में भी सावधानी रखना आवश्यक है। कभी कभी ऐसा होता है कि कहानी बहुत रोचक न होने पर भी शीर्षक की रोचकता से आद्योपान्त पढ़ ली जाती है; साथ ही यह भी अक्सर देखा गया है कि कहानी का विषय पूर्ण मनोरञ्जक होने पर भी पाठक उसे ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ते, क्योंकि कहानी के शीर्षक चुनने में लेखक ने पूरा ध्यान नहीं दिया और एक साधारण सा नाम रख दिया। पश्चिमीय कहानी-लेखक अपनी कहानी का शीर्षक चुनने में बड़ी बुद्धिमत्ता दिखाते हैं। वे कहानी का शीर्षक ऐसा रोचक रखते हैं कि पाठकों को उसके पढ़ने के लिए स्वयं विवश होना पड़ता है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि कहानी चाहे जितनी गई बीती हो नाम से काम चल जायगा, पर इतना ज़रूर है कि शीर्षक की रोचकता पाठकों का चित्त अवश्य आकर्षित कर लेती है।

यह भी ध्यान रहे कि कहानी का शीर्षक कहानी के विषय के अन्तर्गत हो, ऐसा कदापि न होना चाहिए कि कहानी का

शीर्षक कहानी के विषय से बिलकुल संबन्ध न रखता हो और पढ़ने के बाद पाठक को शीर्षक से प्रेम न रह जाय। ऐसा शीर्षक, लेखक को हास्यास्पद बना देता है, इसलिए शीर्षक ऐसा होना चाहिए जिसका कहानी के विषय से सीधा संबन्ध हो। और उसे कहानी के विषय का संकेत भी होता रहे।

यदि किसी कहानी में खास पात्र का चरित्र-चित्रण ही हो, तो कहानी का शीर्षक उस पात्र का नाम या उसका गुण हो सकता है। इसी तरह यदि किसी कहानी में कोई चुभता हुआ वाक्य आजाय जिस पर कहानी का प्लाट निर्भर हो तो वह भी शीर्षक का काम दे सकता है, इत्यादि।

कहानी का चित्ताकर्षक शीर्षक देना बुद्धिमत्ता का काम है, उसमें मौलिकता होना चाहिए, साथ ही शीर्षक छोटा और नवीन होना चाहिए। शीर्षक की उत्तमता और आकर्षण देखकर सम्पादक की अभिरुचि भी बढ़ जाती है और इस तरह से लेखक को बहुत कुछ सफलता सम्पादक की ही प्रसन्नता से हो जाती है।

## (२) कहानी का मसविदा।

कहानी में विषय हालाँकि अधिक आवश्यक है और मसविदा का स्थान उसकी अपेक्षा बहुत छोटा समझा जाता है, किन्तु तिस पर भी कुछ ऐसी बातें हैं जिनका अन्वय व व्यतिरेक जान लेने से कहानी को पत्रिकाओं में छपने का अच्छा अवसर मिल जाता है।

मसविदा साफ़ साफ़ काग़ज़ के एक ही तरफ़ लिखना चाहिए। उचित स्थान पर आवश्यकतानुसार विराम लगाया जाना चाहिए। अधिक विराम व्यर्थ में न लगाये जायँ इससे पाठक को उलझन होती है। पंक्तियों के दरमियान काफ़ी जगह छोड़ना चाहिए, जिसमें सम्पादक यदि कुछ बढ़ाना, घटाना चाहे तो उसको जगह का अभाव न रहे। हाशिया हर पृष्ठ पर काफ़ी और बराबर छोड़ना चाहिए। जिस काग़ज़ पर मसविदा लिखा जाय वह रंगीन न हो, बहुत बड़ा या बहुत छोटा न हो। फुलिस्केप साइज़ काग़ज़ अच्छा समझा जाता है। मसविदा में बहुत काट छाँट न हो जहाँ तक हो सके साफ़ सुथरा हो। उसके पहले पृष्ठ पर कहानी का शीर्षक और लेखक का नाम और पूरा पता होना चाहिए। पृष्ठों पर पृष्ठ-संख्या अवश्य डालना चाहिए और अन्तिम पृष्ठ पर भी लेखक को अपना नाम व पता लिख देना चाहिए, जिसमें अगर पहला पृष्ठ फट जाय या न मिले तो उसी के सहारे मसविदा वापिस हो सकता है। इन आवश्यक बातों के सिवा तसवीर व बेलबूटा बनाने की ज़रूरत नहीं, ऐसा करने से समय व्यर्थ जाता है और सम्पादक पर इसका कोई अच्छा असर नहीं पड़ता।

मसविदा वापस मँगाने के लिए अपने पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा उसके साथ ही रख देना चाहिए, अन्यथा सम्पादक को अस्वीकृत कहानी वापस करने में भार जान

पड़ता है। मसविदे को गोल लपेट कर न भेजना चाहिए, उसे चौपरत या दो परत करके मोटे कागज़ में भेजना चाहिए।

मसविदा के साथ बिलकुल साधारण और संक्षिप्त पत्र लिखना चाहिए, उसमें व्यर्थ की प्रार्थना जैसे कि, "यह मेरा पहला प्रयत्न है वापस करके मुझे निराश न कीजिएगा," "मैं बड़ा ग़रीब हूँ, सहायता कीजिएगा" "कहानी का पुरस्कार आयेगा तो बीमार लड़के के लिए दवा लाऊँगा" इत्यादि। सम्पादक अपने काम में ऐसा व्यस्त रहता है कि उसे लम्बे पत्र पढ़ने के लिए और ऐसी व्यर्थ बातों पर ध्यान देने के लिए समय नहीं रहता। सम्पादकों से बिना काम के मिलना और उनका समय नष्ट करना ठीक नहीं होता। उनसे अपनी कहानी की आलोचना करने की व राय देने की प्रार्थना न करना चाहिए, क्योंकि यह सम्पादक का काम नहीं है—यदि वे ऐसा करने लगें और प्रत्येक निबन्ध पर टीका-टिप्पणी देने लगें तो आवश्यक कामों के लिए उन्हें छुट्टी ही न मिले।

मसविदा के सम्बन्ध में बार बार शीघ्रतापूर्वक पत्र-व्यवहार करना ठीक नहीं, क्योंकि सम्पादक को स्वयं ध्यान रहता है कि उस पर अपनी राय स्थित करके रख ले या वापस कर दे।

मसविदे कभी कभी डाक में या सम्पादक के दफ़्तर में खो जाते हैं, इसलिए लेखक को उनकी प्रतिलिपि अवश्य रख लेना चाहिए।

## ( ३ ) कहानी का पुरस्कार

पश्चिमी देशों में कहानी-लेखक को अच्छा पुरस्कार मिल जाता है, जैसा कि इस किताब के आरम्भ में बतलाया गया है। वहाँ कहानी-लेखक की अच्छी प्रतिष्ठा है और उसको इतना पुरस्कार मिल जाता है कि वह अपना और अपने कुटुम्ब का अच्छी तरह पालन कर सके। इसके विपरीत इस निर्धन देश में कहानियों का उचित पुरस्कार नहीं मिलता और लेखक को अपना जीवन बहुत साधारण रीति से बिताना पड़ता है। आज-कल बहुत से लेखक प्रेस में अपना नाम विख्यात होने के लिए अपनी कहानी मुफ़्त प्रकाशित होने के लिए भेज देते हैं, और इस वजह से आम तौर पर लेखकों का दर्जा घटाते हैं, जिससे पुरस्कार व प्रतिष्ठा दोनों खो जाने का भय रहता है। यदि लेखक की कहानी छपने योग्य है—उस पर पुरस्कार अवश्य मिलना चाहिए और यदि लेखक पुरस्कार लेना चाहता है, और सम्पादक अच्छी कहानी छापना चाहता है तो कहानी पर पुरस्कार अवश्य मिलेगा। पश्चिमी देशों में कोई भी विख्यात पत्रिका कहानी का पुरस्कार दिये बिना कहानी नहीं छापती और यदि कोई लेखक पुरस्कार नहीं लेता तो वह अप्रतिष्ठित समझा जाता है। हिन्दुस्तान में भी यदि लेखक अपना व अपने लेखक भाइयों का ख़याल करके बिना पुरस्कार लिये हुए अपनी रचनाओं को छपने की आज्ञा न दें तो लेखकों को भी लाभ

पहुँचे और सिर्फ़ उम्दा कहानियाँ पत्रिकाओं में छपें। साहित्य का ख्याल करते हुए और लेखकों को योग्य स्थान देने के अभिप्राय से सम्पादकों को भी यह सिद्धान्त बना लेना चाहिए कि सिर्फ़ उत्तम लेख या कहानी छापेंगे और उस पर उचित पुरस्कार देंगे।

लेखक को अपनी रचना का पुरस्कार लेते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने लेख व कहानी के अधिकारों को कितने हद तक सम्पादक को देता है। कभी कभी सम्पादक नये लेखकों की अनभिज्ञता से लाभ उठाते हुए उनके सर्वाधिकार ले लेते हैं, ऐसी दशा में यदि लेखक अपने लेखों को पुस्तकाकार छपाना चाहे तो नहीं छपा सकता। इसलिए नये लेखक को सावधानी से ये बातें सम्पादक से पहले ही तय कर लेनी चाहिए ताकि बाद को अगर लेखक किताब छपाना चाहता है, या अनुवाद करना चाहता है, या उससे फ़िल्म बनवाना चाहता है, तो उसे कोई कठिनाई न पड़े।

## ( ४ ) कौन कहानी कहाँ भेजना चाहिए।

पश्चिमी देशों में धन की प्रचुरता और साहित्यिक नियम के पालन की वजह से पत्रिकाओं का स्थान बहुत ऊँचा होगया है। वहाँ पत्रिकाओं की क़िस्में भी विभाजित होगई हैं, इसलिए लेखक को, उन देशों में कौन सी कहानी कहाँ प्रकाशित हो सकती है, जानने में कठिनाई नहीं पड़ती। इसके विपरीत हमारे निर्धन हिन्दुस्तान में अभी तक साहित्यिक

नियमों का ठीक पालन नहीं होता। इसके मुख्य दो कारण हैं (१) हिन्दुस्तान ग़रीब देश है, इसलिए सम्पादक कहानियों के उचित पुरस्कार नहीं दे सकते और कभी कभी तो बिना कुछ पुरस्कार पाये ही हुए लेखक सम्पादकों के ऊपर ज़बरदस्ती कृपा करके अपनी कहानी छपा देते हैं। (२) अभी तक साहित्य का स्थान इतना ऊँचा नहीं हुआ है, कि भिन्न भिन्न कहानियाँ भिन्न भिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हों।

पश्चिमी देशों में पुरुषों, स्त्रियों, बालकों और बालिकाओं के लिए अलग अलग पत्रिकायें प्रकाशित की जाती हैं और भिन्न भिन्न विषय की पत्रिकायें जैसे कोई धर्म पर, कोई सामाजिक सुधार पर, कोई राजनैतिक विषय पर इत्यादि भी अलग अलग छपती हैं; किन्तु हमारे ग़रीब भारतवर्ष में एक ही पत्रिका को दो चार कुटुम्ब के बूढ़े, जवान, स्त्री, बालक, आदि पढ़ते हैं। ऐसी दशा में यह कैसे संभव हो सकता है कि लेखक यह समझ सके कि अमुक कहानी अमुक पत्रिका में प्रकाशित होनी चाहिए। यहाँ तो यह हाल है कि "बीरबल लाओ ऐसा नर, पीर बबर्ची भिश्ती ख़र" और इसी नियम के अनुसार इस देश की एक ही पत्रिका में सब प्रकार के विषय छपते हैं। चाहे कहानी भली हो चाहे साधारण दर्जे की हो यदि मौक़ा मिला तो किसी भी पत्रिका में छप सकती है। हाँ अब अलबत्ता इस बात का प्रयत्न आरम्भ हो गया है कि भारतवर्ष

में भी पत्रिकाओं का विभाग कर दिया जाय और आशा की जाती है कि निकटभविष्य में इस कमी में अच्छी उन्नति होगी। इस कार्य को सफलता के लिए सम्पादक और लेखक दोनों को पूरा प्रयत्न करना चाहिए ताकि साहित्यिक उन्नति में अब यह देश किसी से पीछे न रहे।

इस साहित्यिक उन्नति में हाथ बँटाने के लिए लेखकों को यह उचित है कि वे अपनी कहानी उसी पत्रिका में भेजें, जिसमें प्रकाशित होने के वे उपयुक्त हों।

यदि बालकों के लिए कोई कहानी लिखी जाय तो उसे उच्च कोटि की पत्रिका में देने से कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता और इसी प्रकार गंभीर विषय पर लिखी हुई कहानी या लेख बालकों की पत्रिकाओं में देना व्यर्थ है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस विषय की कहानियाँ हों उसी विषय की पत्रिका में भेजी जानी चाहिए।

अनुभव से यह पता चलता है कि कहानियाँ सुखान्त और प्रेम के विषय पर अधिक पसन्द की जाती हैं और दुःखान्त कहानियाँ लोग कम पसन्द करते हैं। यदि कोई ख़ास वजह न हो तो लेखक को उसी प्रकार की कहानियाँ लिखना चाहिए जो तुरन्त पसन्द होकर छप जायँ।

इति